

कृषक



दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 15 से 21 अप्रैल 2025 ● वर्ष-25 ● अंक-47 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

इफको नैनो यूरिया एलस (तरल)
FCD अतिउच्च गुणवत्ता वाले नैनो यूरिया

फसलों की भरपूर पैदावार के लिए

इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला

इफको नैनो डीएपी (तरल)

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तुलसी तला, पर्यायान भवन अररा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

ऑनलाइन खरीदारी के लिए: www.iffcobazar.in फोन नंबर: 1800 163 1967 | [iffco.coop](https://www.facebook.com/iffco.coop) | [iffco.coop](https://www.instagram.com/iffco.coop) | [iffco](https://www.youtube.com/iffco) PR | [iffco](https://www.twitter.com/iffco)

सहकारी समितियां अब पेट्रोल पम्प व गैस एजेंसी भी चलाएंगी : श्री शाह

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मध्यप्रदेश डेयरी फेडरेशन के मध्य सहकारिता अनुबंधों का हुआ आदान-प्रदान

भोपाल। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा है कि राज्यों में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियां (पैक्स) के कंप्यूटराइजेशन का कार्य चल रहा है। इसमें मध्यप्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। केन्द्रीय मंत्री ने मध्यप्रदेश में शत-प्रतिशत उपलब्धि की सराहना की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में साढ़े 5 करोड़ लीटर दूध का उत्पादन होता है जो देश के कुल उत्पादन का 9 प्रतिशत है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ मिलकर कम से कम 50 प्रतिशत गांवों तक सहकारिता और डेयरी गतिविधियों का विस्तार करना आवश्यक है।



इसके लिए आवश्यक नीति निर्माण और प्लानिंग भी करना होगी। केन्द्र सरकार की ओर से वित्तीय सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। किसानों को दुग्ध उत्पादन का शत-प्रतिशत लाभ सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्तर पर गतिविधियां संचालित करनी होंगी। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन और उसकी प्रोसेसिंग से विभिन्न उत्पाद निर्मित कर किसानों की आय बढ़ाने की ओर एनडीडीवी और राज्य सरकार एक साथ अग्रसर होंगे। यह रास्ता अभी टू-लेन है, जिसे 6 लेन में विस्तारित करना होगा।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

कामधेनू गौपालन योजना शुरु

इस मौके पर उपस्थित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सरकार कामधेनू गौपालन योजना शुरु करेगी। इसके तहत 25 गाय-भैंस की एक यूनिट पर 25 प्रतिशत अनुदान मिलेगा। एक किसान अधिकतम 8 यूनिट लगा सकेगा।

इस साल सामान्य बारिश का अनुमान

- म.प्र. एवं महाराष्ट्र में पर्याप्त बारिश की संभावना
- उत्तरी व दक्षिणी भारत में होगी सामान्य बारिश

पश्चिम-दक्षिण भारत में होगी झमाझम के आसार

नई दिल्ली। मौसम का पूर्वानुमान लगाने वाली निजी एजेंसी स्काईमेट ने कहा कि 2025 में दक्षिण पश्चिम मॉनसून 'सामान्य' रह सकता है। उसने मॉनसून के दीर्घावधि के औसत यानी एलपीए के 103 फीसदी रहने का भी अनुमान जताया। इसके पांच फीसदी ऊपर या नीचे रहने की गुंजाइश रखी गई है। स्काईमेट के अनुसार जून से सितंबर तक के मॉनसून का एलपीए 868.6 मिलीमीटर रह सकता है और 96 से 104 एलपीए को सामान्य माना जाता है। अगर वास्तविक वर्षा पूर्वानुमान से मेल खाती है तो इसका अर्थ यह होगा कि देश के कृषि क्षेत्र के लिए अच्छी

खबर रहने वाली है और सरकार को भी वित्त वर्ष 26 में खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में मदद मिलेगी। 2025 के मॉनसून को लेकर पहले आधिकारिक अनुमान पेश करते हुए स्काईमेट के प्रबंध निदेशक जतिन सिंह ने कहा कि इस वर्ष अल नीनो की संभावना नहीं है। अल नीनो प्रभाव अक्सर भारतीय मॉनसून को प्रभावित करता है। श्री सिंह ने कहा कि ला नीना की उपस्थिति और अल नीनो के प्रभावी न होने से मॉनसून के बेहतर रहने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, 'ऐतिहासिक रूप से अल नीनो सदरन



ऑसिलेशन यानी ईएनएसओ निरपेक्षता तथा इंडियन ओशन ड्राईपोल से मॉनसून के बेहतर रहने की उम्मीद है।' स्काईमेट का मानना है कि ईएनएसओ और इंडियन ओशन ड्राईपोल में तालमेल रहेगा और ये 2025 के दौरान मॉनसून को सुरक्षित रखेंगे। क्षेत्रवार आंकड़ों की बात करें तो स्काईमेट ने कहा कि उसे उम्मीद है कि पश्चिम और

दक्षिण भारत में मॉनसून बेहतर रह सकता है जबकि महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के आधारभूत वर्षा निर्भर क्षेत्रों में भी पर्याप्त बारिश हो सकती है। आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र के अनुसार इस साल मॉनसून सीजन के दौरान अल नीनो की स्थिति नहीं बनेगी। भारत में मॉनसून सीजन के दौरान होने वाली लगभग आधी खेती अच्छी

मानसून के चार महीने बारिश का पूर्वानुमान

महीने	सामान्य	कम/ज्यादा
जून	165.3 मिमी	96 प्रतिशत
जुलाई	280.5 मिमी	102 प्रतिशत
अगस्त	254.9 मिमी	108 प्रतिशत
सितंबर	167.9 मिमी	104 प्रतिशत

बारिश पर ही निर्भर होती है। सीजन में मुख्य रूप से धान, दलहन और तिलहन की खेती को बारिश की काफी जरूरत होती है। वहीं जिस साल मॉनसून सीजन में बारिश अच्छी होती है, उसके कारण रबी सीजन में बुवाई के दौरान किसानों को फायदा होता है और शुरुआत में सिंचाई की भी बहुत जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि मिट्टी में नमी बनी रहती है। सालों से चले आ

रहे ट्रेंड को देखें तो भारत में दक्षिण-पश्चिम मॉनसून मई के अंत या 1 जून तक केरल से प्रवेश करता है और जुलाई की शुरुआत में देशभर में पहुंच जाता है। इसके बाद मॉनसून के लौटने की शुरुआत मध्य सितंबर से होती है और यह उत्तर-पश्चिम जाते हुए 15 अक्टूबर तक पूरी तरह लौट जाता है। हालांकि पिछले साल मॉनसून की विदाई बहुत देरी से हुई थी।

किसानों के जीरो फीसदी ब्याज दर पर क्रेडिट कार्ड मिलेंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में संपन्न मंत्रि-परिषद की बैठक में राज्य में पशुपालन एवं डेयरी से संबंधित गतिविधियों में रोजगार के नवीन अवसर बढ़ाने, उत्पादकता बढ़ाने, किसानों की आय बढ़ाने से जीएसडीपी में वृद्धि और राष्ट्र की जीडीपी में योगदान बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना की निरन्तरता (वर्ष 2024-25 तथा 2025-26) रखते हुए योजना का नाम डॉ. अम्बेडकर पशुपालन विकास योजना रखे जाने का निर्णय लिया गया। स्वीकृति अनुसार सहकारिता के माध्यम से पशुपालन गतिविधियों के लिए शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर किसान को क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराये जायेंगे। नस्ल सुधार के लिए भ्रूण प्रत्यारोपण कार्यक्रम और बांझ निवारण शिविरों का आयोजन किया

मंत्रि-परिषद की बैठक में निर्णय



जायेगा। मुख्यमंत्री डेयरी प्लस कार्यक्रम, चारा उत्पादन कार्यक्रम, प्रदेश की मूल गौवंशीय नस्ल एवं भारतीय उन्नत नस्ल की दुधारू गायों के लिए पुरस्कार कार्यक्रम, मुख्यमंत्री दुधारू पशु प्रदाय कार्यक्रम तथा पशुपालकों को योजनाओं की जानकारी प्रदाय करने एवं उन्मुखीकरण के लिए प्रचार-प्रसार कार्यक्रम की निरन्तरता पर स्वीकृति दी गयी। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश में निराश्रित गौवंश की समस्या के निराकरण के लिए

पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य में स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति-2025 की स्वीकृति देने का निर्णय लिया गया है।

मंत्रि-परिषद द्वारा गौशालाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करने और मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणा के अनुक्रम में गौ-शालाओं को 20 रुपये प्रति गौवंश प्रति दिवस से बढ़ाकर 40 रुपये प्रति गौवंश प्रति दिवस किये जाने का निर्णय लिया गया।

सहकारी समितियों की कार्य प्रणाली में पारदर्शिता जरूरी : डॉ. यादव

दिसम्बर 2025 तक सभी समितियों का कम्प्यूटराईजेशन करने के निर्देश

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सहकारी समितियों की साख और जन सामान्य में उनके प्रति विश्वास बनाए रखने के लिए समितियों की कार्य प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करना आवश्यक है। अतः सभी प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के कार्यों का शत-प्रतिशत कम्प्यूटराईजेशन सुनिश्चित किया जाए।

डॉ. यादव ने जून 2025 तक समितियों का ऑडिट पूर्ण कर कृषकों को लेन-देन की सूचना एसएमएस के माध्यम से उपलब्ध कराने और दिसम्बर 2025 तक सभी समितियों के कार्यों का कम्प्यूटराईजेशन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में हुई सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक में निर्देशित कर रहे थे। बैठक में सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग, मुख्य सचिव अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव सहकारिता अशोक वर्णवाल तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. यादव ने कहा कि अल्पसेवित पंचायतों की पहचान कर नवीन सहकारी समितियों के गठन के लिए प्राथमिकता पर कार्यवाही की जाए। वर्तमान परिदृश्य और आवश्यकताओं को देखते हुए अधिक से अधिक समितियों में



पारंपरिक गतिविधियों के साथ-साथ कॉमन सर्विस सेंटर, प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र, जन औषधि केंद्र, जल कर वसूली केंद्र और एग्री ड्रोन संचालन जैसी गतिविधियां चलाई जाएं। इसके साथ ही को-ऑपरेटिव-पब्लिक- प्राइवेट-पार्टनरशिप के माध्यम से सहकारी-सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की भागीदारी से सहकारी समितियों को व्यवसाय के नए अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में विशेष प्रयास किए जाएं। डॉ. यादव ने सहकारिता में नवाचार करते हुए ड्रिप एग्रीगेशन, ग्रेडिंग-सार्टिंग और पैकेजिंग, जंगल सफारी, गेस्ट हाउस और खाद्य प्र-संस्करण जैसी गतिविधियां को प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए।

जायद फसलों की बुवाई 55 प्रतिशत पूरी

भोपाल। प्रदेश में जायद (ग्रीष्मकालीन) फसलों की बुवाई किसानों द्वारा शीघ्रता से की जा रही है। अभी तक 7.36 लाख हेक्टेयर में जायद फसलों की बुवाई की जा चुकी है। गत वर्ष समान अवधि में 4.88 लाख हेक्टेयर में बुवाई की गई थी। इस वर्ष 13.47 लाख हेक्टेयर में जायद फसलों की बुवाई प्रस्तावित है।

कृषि संचालनालय से प्राप्त जानकारी अनुसार सबसे अधिक मूंग की बुवाई 6.16 लाख हेक्टेयर में की गई है। पिछले साल समान अवधि में 3.99 लाख हेक्टेयर में बुवाई की गई थी। चालू सीजन में 11.58 लाख हेक्टेयर में मूंग बोने का लक्ष्य रखा गया है। लक्ष्य की तुलना में 53 प्रतिशत मूंग की बुवाई की जा चुकी है। उड़द की बुवाई 50 हजार 703 हेक्टेयर में की गई है जो गत वर्ष की बुवाई 36 हजार 343 हेक्टेयर से काफी कम है। जायद की अन्य फसलों में धान 51 हजार

314 हेक्टेयर, मक्का 8 हजार 463 हेक्टेयर एवं मूंगफली 9 हजार 488 हेक्टेयर में बोयी गई है।



ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई

फसल	इस वर्ष की बोनी	इस वर्ष का लक्ष्य	गत वर्ष समान अवधि में बोनी	लक्ष्य की तुलना में बुवाई प्रतिशत
मूंग	616047	1159227	399645	53
उड़द	50703	95260	35343	53
योग दलहन	666750	1254487	434988	53
धान	51314	45132	37488	114
मक्का	8463	27877	9829	30
योग अनाज	59777	73009	47317	82
मूंगफली	9488	19586	5739	48
महायोग	736015	1347082	488044	55

(इकाई- क्षेत्र हेक्टेयर में)

कृषि उपज मॉडलिंग पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण

भोपाल। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल द्वारा कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय व्याख्यान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में एआई/एमएल आधारित कृषि उपज मॉडलिंग पर विशेषज्ञों ने व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आए वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग सेंटर, कृषि विभाग एवं बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में डॉ. सुनील दुबे (उप निदेशक, एमएनसीएफसी, डीए एंड एफडब्ल्यू, भारत सरकार) ने यस-टेक परियोजना की कार्यप्रणाली, कार्यान्वयन की स्थिति, राज्यों में प्रगति, चुनौतियों एवं उनके समाधान पर विस्तार से चर्चा की। ऋषभ सक्सेना (पायथन डेवलपर एवं एआई/एमएल विशेषज्ञ) ने एआई/एमएल तकनीक का परिचय देते हुए फसल उपज अनुमान मॉडल को प्रस्तुत किया। उन्होंने न्यूरल नेटवर्क और रैंडम फॉरेस्ट जैसे तकनीकों के उपयोग के साथ क्रॉस वैलिडेशन मैट्रिक्स के माध्यम से त्रुटि विश्लेषण की जानकारी दी।

डॉ. नीतू (वैज्ञानिक एसएफ, आरआरएससी, उत्तर नई दिल्ली) ने उपग्रह डाटा की सहायता से फसल मानचित्रण की उन्नत विधियों पर व्याख्यान देते हुए कृषि में हो रहे बदलावों को एआई/एमएल एवं रिमोट सेंसिंग

के माध्यम से प्रस्तुत किया।

डॉ. करुण कुमार चौधरी (वैज्ञानिक-एसएफ, प्रमुख- फसल मूल्यांकन प्रभाग, एएसएजी, एनआरएससी) ने उपज अनुमान मॉडलिंग में रिमोट सेंसिंग, बीमा इकाई के प्रयोगों की विस्तार से जानकारी दी। डॉ. भवानी (एमएनसीएफसी, नई दिल्ली) ने धान की फसल पर आधारित उपज अनुमान मानचित्र प्रस्तुत किया और वर्तमान में अपनाई जा रही एआई/एमएल तकनीकों की भूमिका को रेखांकित किया। व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र में मनोज पटीदार ने डाटा डाउनलोडिंग एवं प्रोसेसिंग की प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया।

डॉ. जी.डी. बैरागी (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एमपीसीएसटी) ने खरीफ मौसम में सोयाबीन फसल की उपज के लिए राजस्थान राज्य में यस-टेक परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित जिलों में एआई/एमएल मॉडलिंग की प्रस्तुति दी। कुछ राज्यों के प्रतिनिधियों ने भी अपने अनुभव साझा किए।

ओडिशा ने क्रॉप हेल्थ फैक्टर पर आधारित कार्य प्रस्तुत किया, उत्तर प्रदेश ने एग्री-बाजार के माध्यम से यस-टेक परियोजना के कार्यान्वयन को साझा किया, कर्नाटक ने सिमुलेशन मॉडल के माध्यम से क्रॉप मैपिंग की जानकारी दी, हरियाणा ने मोबाइल एप्स द्वारा खसरा आधारित उपज अनुमान की तकनीक प्रस्तुत की।

नेपाल के प्रधानमंत्री से शिवराज सिंह चौहान ने की मुलाकात

कृषि क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत करने पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली से काठमांडू में मुलाकात की। साथ ही, श्री चौहान ने नेपाल और भूटान के कृषि और पशुधन मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी की। इसके अलावा, कृषि पर तीसरी बिम्सटेक मंत्रिस्तरीय बैठक के अवसर पर श्री चौहान की बिम्सटेक के महासचिव से भी भेंट हुई।

श्री चौहान की नेपाल के प्रधानमंत्री श्री ओली से मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने भारत और नेपाल के बीच घनिष्ठ व मैत्रीपूर्ण संबंधों की पुष्टि की और कृषि के क्षेत्र में भारत-नेपाल सहयोग को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने आशा व्यक्त की कि नए हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन से कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त होगा।



चितवन में कृषि-औद्योगिक पार्क और नेपाल में एक उर्वरक संयंत्र की स्थापना के माध्यम से नेपाल को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में समर्थन देने की भारत की प्रतिबद्धता दोहराई। दोनों पक्षों ने बाजार पहुंच के मुद्दों पर भी चर्चा की। नेपाल और भूटान के साथ द्विपक्षीय बैठकों के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्री चौहान ने किया। नेपाल के कृषि एवं पशुधन विकास मंत्री रामनाथ अधिकारी के साथ काठमांडू में द्विपक्षीय बैठक में मंत्रियों ने कृषि के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की तथा दोनों देशों के पारस्परिक लाभ

के लिए सहयोग को और बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। भारत और नेपाल की सरकारों के बीच कृषि के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता ज्ञापन 6 दिसंबर 1991 को दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन का स्थान लेगा। यह समझौता ज्ञापन विशेष रूप से फसल उत्पादकता में सुधार, कटाई के बाद प्रबंधन, कृषि अनुसंधान और क्षमता निर्माण, बाजार पहुंच, कृषि व्यापार और जलवायु अनुकूल एवं टिकाऊ कृषि जैसे क्षेत्रों में चल रहे सहयोग को नई गति देगा।

कृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए निरंतर हो रहा काम : श्री चौहान

भारत और इजराइल के बीच बागवानी क्षेत्र में कार्ययोजना का आदान-प्रदान

नई दिल्ली। कृषि एवं खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर स्थित अंतरराष्ट्रीय अतिथि गृह में केंद्रीय कृषि, किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान और इजराइल के कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री अवि दिख्तर के बीच एक उच्च स्तरीय बैठक हुई। इजराइल के कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री के रूप में श्री दिख्तर की भारत की पहली आधिकारिक यात्रा के दौरान यह बैठक हुई।



नई दिल्ली में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक के दौरान कृषि सहयोग समझौते और कार्य योजना पर हस्ताक्षर करके दोनों देशों ने कृषि क्षेत्र में अपनी साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया है। इस समझौते से मृदा एवं जल प्रबंधन, बागवानी एवं कृषि उत्पादन, फसल-पश्चात प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी, कृषि मशीनीकरण, पशुपालन तथा अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सहयोग मजबूत होगा।

श्री चौहान ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः के आदर्शों में विश्वास करता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। उन्होंने भारत-इजराइल के बीच कृषि कार्य योजनाओं की सफलता में विशेष रूप से 43 उत्कृष्टता केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से माशाव

की भूमिका की प्रशंसा की, जिनमें से देश भर में 35 पूरी तरह सक्रिय उत्कृष्टता केन्द्र हैं। इजराइल के कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री श्री दिख्तर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इजराइल और भारत के बीच गहरे संबंध हैं तथा दोनों देश अधिक उपज देने वाले बीज की किस्मों और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में मिलकर काम कर सकते हैं।

बढ़ती आबादी और घटती हुई जोत की चुनौतियों को देखते हुए श्री चौहान ने कृषि उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने किसानों तक उन्नत बीज पहुंचाने के लिए भारतीय और इजरायली वैज्ञानिकों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के महत्व पर भी जोर दिया। बैठक में कृषि से संबंधित विभिन्न नवाचारों और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी चर्चा हुई। इजरायली पक्ष ने भारत के डिजिटल कृषि मिशन और उसके द्वारा भारत में किसानों को सशक्त बनाने के तरीके में भी गहरी रुचि दिखाई। भारत की ओर से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग और कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव देवेश चतुर्वेदी के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रभाग, एकीकृत बागवानी विकास मिशन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, पौध संरक्षण के संयुक्त सचिव और विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने बैठक में भाग लिया।

केन्द्र सरकार ने खेतों तक पाइप से पानी पहुंचाने की नई योजना को दी मंजूरी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मौजूदा नहरों या निर्दिष्ट क्लस्टर में अन्य स्रोतों से सिंचाई जल आपूर्ति के नेटवर्क का आधुनिकीकरण करने के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) की उप-योजना को मंजूरी दे दी। इसमें प्रायोगिक परियोजना के रूप में वर्ष 2025-26 की अवधि के लिए पहले 1,600 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं।

शुरुआत में यह उप-योजना लगभग 80,000 किसानों को कवर करते हुए 78 जगहों पर चलाई जाएगी। इसका उद्देश्य मौजूदा स्थापित स्रोत से लेकर 1 हेक्टेयर तक के खेतों तक सिंचाई का पानी पहुंचाने के लिए मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार करना है। ये पाइप नहरों आदि सिंचाई स्रोतों से खेतों तक पानी ले जाएंगे। इस प्रकार जल स्रोतों से दूरदराज के खेतों तक पानी पहुंचाने की बहुप्रतीक्षित योजना अमल में आएगी।

इस योजना का उद्देश्य सिंचाई जल-आपूर्ति नेटवर्क का आधुनिकीकरण कर मौजूदा नहरों या अन्य स्रोतों से सिंचाई जल की आपूर्ति करना भी है। बयान में कहा गया है कि सिंचाई संपत्तियों के प्रबंधन के लिए जल उपयोगकर्ता सोसायटी को सिंचाई प्रबंधन हस्तांतरण द्वारा इस परियोजना को टिकाऊ बनाया जाएगा। जल-उपयोगकर्ता सोसाइटियों को पांच वर्षों के लिए एफपीओ या पीएसीएस जैसी मौजूदा आर्थिक संस्थाओं के साथ जोड़ने के लिए शुरुआती मदद दी जाएगी।

अन्नदाता का साथ किसान का विकास

अन्नदाता जिबो

जिकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)
सल्फर और जिंक की ताकत
ग्यावा उपज और कम लागत

अन्नदाता जिबो का वादा
बिटी ज्ञानदार और उपज भी ज्यादा

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)
उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मैधनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (राजवा एवं बण्डा - सागर)

साप्ताहिक सुविचार

कर्म का भोजन पसीना है, जितना इसे खिलाओगे उतना ही स्वर्ण प्रदान करेगा।
- सुभाषित

गेहूं खरीदी में पारदर्शिता आवश्यक

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं की सरकारी खरीद की जा रही है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, नर्मदापुरम संभाग सहित अन्य जिलों में गेहूं की खरीद शुरू हो गई है। जिला कलेक्टर्स ने अपने स्तर पर गेहूं की खरीद के लिये व्यापक प्रबंध सुनिश्चित किये हैं। प्रदेश में इस साल 2600 रुपये प्रति क्विंटल के भाव गेहूं खरीदा जा रहा है। केन्द्र ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया है जिस पर मध्यप्रदेश सरकार ने 175 रुपये क्विंटल बोनस देने का फैसला किया है। वैसे तो प्रदेश की भाजपा सरकार ने अपने

घोषणा पत्र में गेहूं का भाव 2700 रुपये क्विंटल देने का वायदा किया है। सरकार की ओर से इस संबंध में कहा गया है कि घोषणा पत्र पूरे पांच साल के लिये होता है। किसानों को चिंतित होने की जरूरत नहीं है। सरकार अपना वायदा पांच साल के भीतर पूरा करेगी। सरकार का फोकस इस साल अधिक से अधिक गेहूं खरीद करने का है। सरकारी भंडार के गेहूं का स्टॉक काफी कम बचा है। मुफ्त खाद्यान्न योजना के लिये सरकार कम से कम 300 से 320 लाख टन गेहूं खरीदना चाहती है। इसमें मध्यप्रदेश की हिस्सेदारी कम से कम 80 से 90 लाख टन की हो सकती है। सरकार द्वारा 175 रुपये क्विंटल बोनस दिये जाने के पश्चात सरकारी खरीद के अन्तर्गत किसान अधिक से अधिक गेहूं बेचना चाहते हैं। गेहूं खरीदी केन्द्रों पर लग रही भीड़ को देखते हुए ऐसा अंदाजा लगाया जा रहा है कि सरकार निर्धारित लक्ष्य तक पहुंच सकती है। एमएसपी पर गेहूं विक्रय करने में किसानों के समक्ष कई परेशानियां भी आ रही हैं। अलावा स्लाट बुक करने के बाद भी किसानों को गेहूं बेचने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रदेश भर में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए गेहूं खरीदी केन्द्रों पर किसानों की सुविधा के लिये भरपूर प्रबंध किया जाना चाहिये। स्लाट बुकिंग के अनुसार किसानों का गेहूं तौला जाना चाहिए। गुणवत्ता के नाम पर किसानों को परेशान नहीं किया जाना चाहिए। जिन किसानों का गेहूं तौला जा चुका है कम से कम सप्ताह भर के अंदर भुगतान की व्यवस्था की जानी चाहिये। गेहूं खरीदी में बिचौलियों का कोई स्थान नहीं होना चाहिये। पारदर्शी तरीके से गेहूं की खरीदी की प्राथमिकता दिये जाने की जरूरत है। गेहूं खरीदी की अंतिम तिथि 5 मई है इसलिये समय के भीतर गेहूं खरीदी पूरी किये जाने की जरूरत है।

किसान गेहूं की नरवाई न जलायें, बल्कि खेत में मिलाकर खाद बनायें

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह, जयपाल छिगारहा एवं हंसनाथ खान द्वारा विगत दिवस किसानों को गेहूं की नरवाई जलाने से भूमि एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्परिणामों के बारे में तिलहन आदर्श ग्राम परियोजना अंतर्गत अंगीकृत ग्राम महोबिया में नरवाई न जलाने की सलाह दी गई। नरवाई में लगभग नत्रजन 0.5 प्रतिशत, स्फुर 0.6 प्रतिशत और पोटाश 0.8 प्रतिशत पाया जाता है, जो नरवाई में जलकर नष्ट हो जाता है और गेहूं फसल में दाने से डेढ़ गुना भूसा होता है। अर्थात् यदि एक हेक्टेयर में 40 क्विंटल गेहूं का उत्पादन होगा तो भूसे की मात्रा 60 क्विंटल होगी। उस भूसे से 30 किलो नत्रजन, 36 किलो स्फुर, 48 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर प्राप्त होगा। जो वर्तमान मूल्य के आधार पर लगभग 3000 रुपये का होगा जो जलकर नष्ट हो जाता है। इसके साथ ही भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव एवं केंचुआ आदि जलकर नष्ट हो जाते हैं। इनके नष्ट होने से खेत की उर्वरता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भूमि की ऊपरी परत में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्व आग लगने के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं साथ ही भूमि की भौतिक दशा भी खराब हो जाती है। भूमि कठोर हो जाती है जिसके कारण भूमि की जल धारण क्षमता कम हो जाती है। फलस्वरूप फसलें जल्द सूखती हैं और कमजोर हो जाती हैं तथा भूमि में होने वाली रासायनिक क्रियायें भी प्रभावित होती हैं, जैसे कार्बन-नाइट्रोजन एवं कार्बन-फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है, जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। गेहूं की



नरवाई में आग लगाने से जन-धन की हानि तथा पेड़-पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं जबकि नरवाई न जलाने से फसल अवशेषों का पशु-चारा, वर्मी-कम्पोस्ट, मशरूम उत्पादन, मल्लिचंग आदि के लिए उपयोग किया जा सकता है।

वैज्ञानिक शोधों के आधार पर ये ज्ञात हुआ है कि एक हेक्टेयर भूमि में फसल अवशेष जैसे-गेहूं/धान को जलाने से पर्यावरण में कार्बन डाईऑक्साइड 9.3 टन, अमोनिया 1.0 टन, नाइट्रस ऑक्साइड 1.5 टन एवं अन्य जहरीली गैसों उत्पन्न होती हैं। जो पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं तथा मनुष्य एवं पशुओं में घातक बीमारियों को पैदा करती हैं। फसल अवशेषों को मृदा में गहरी जुताई करके मिला देने से रोग, कीट और खरपतवारों में कमी होती है, उससे प्रति हेक्टेयर रुपये 2500 की बचत होती है तथा दलहनी फसल अवशेषों से बनाये गये कम्पोस्ट में नत्रजन 1.8 प्रतिशत, फास्फोरस 3.4 प्रतिशत तथा पोटाश 0.4 प्रतिशत तक अधिक पाया जाता है। बायो-डीकम्पोजर का उपयोग फसल अवशेषों को शीघ्र सड़ाकर कम्पोस्ट खाद तैयार करने में किया जा सकता है। एक शीशी बायो-डीकम्पोजर/ बायो-डाईजेस्टर 150 मि.ली. को एक प्लास्टिक ड्रम में दो किलो गुड़ के साथ 200 लीटर पानी में डालकर 7 दिन तक डंडे से हिलाते रहना चाहिए फिर इसका उपयोग किया जा सकता है तथा उपयोग करते समय खेत नमीयुक्त होना चाहिए। आधुनिक मशीनों के उपयोग से फसल अवशेषों के होते हुए भी दूसरी फसलों की खेती संभव है तथा फसल अवशेषों को मृदा में अच्छी तरह से मिलाया जा सकता है, जो बाद में सड़कर पौषक तत्व प्रदान करते हैं। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 36 किसान उपस्थित रहे।

संभागीय समयमान वेतनमान की बैठक आयोजित

नर्मदापुरम। कार्यालय संयुक्त संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास नर्मदापुरम संभाग नर्मदापुरम में संभागीय समयमान वेतनमान की बैठक बी.एल. बिलैया संयुक्त संचालक कृषि नर्मदापुरम की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सेवानिवृत्त एवं अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समयमान वेतनमान के प्रस्ताव संभागीय समयमान वेतनमान समिति के समक्ष प्रस्तुत किये गये। जिसमें वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी 01, कृषि विकास अधिकारी 01, भूमि संरक्षण सर्वे अधिकारी 01, कृषि विस्तार अधिकारी 04, सहायक ग्रेड-2-04, सहायक ग्रेड-3,02 वाहन चालक 01 एवं चतुर्थ श्रेणी के 03 प्रस्ताव शामिल किये गये। बैठक में किसान कल्याण तथा कृषि विकास संचालनालय से संजय दोषी, उप संचालक संचालक, कृषि संचालक कृषि के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुए एवं उप संचालक कृषि बैतूल डॉ. आनन्द कुमार बडोनियां, जी.एस. बेले सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी पवारखेड़ा एवं कार्यालयीन सहायक संचालक कृषि सियाराम सोलंकी सहित अन्य अधिकारी / कर्मचारी उपस्थित रहे।

पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन



रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र जावरा द्वारा पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम अंतर्गत महिला एवं बाल विकास के सहयोग से एक संस्थागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सर्वेश त्रिपाठी ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बायो-फोर्टीफाइड फसलों के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की। महिला एवं बाल विकास विभाग की सहायक निदेशक विनीता लोढा ने पोषण गृह वाटिका एवं पोषण ट्रेकर एप के बारे में जानकारी प्रदान की, साथ ही केंद्र की विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. बरखा शर्मा ने गर्भावस्था से शिशु की 2 वर्ष की आयु तक 1000 दिनों पर विशेष जोर दिया। इसके अंतर्गत मातृ पोषण, उचित स्तनपान के तरीके, एनीमिया को रोकने और संतुलित आहार के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की गई। उपरोक्त कार्यक्रम में विभाग की सुपरवाइजर भारती सोनी एवं केवीके के डॉ. सी.आर. कांटवा, डॉ. रामधन घसवा, डॉ. रोहताश सिंह भदौरिया, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप तिवारी, डॉ. शिशराम जाखड़ उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास विभाग की 26 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

अनमोल वचन

न्याय में ही वास्तविक सुख है। अन्याय करने वाले को कभी न कभी दुखी होना पड़ता है।
- सुकरात

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
15 अप्रैल 25	मंगलवार	बैशाख कृष्ण-02	
16 अप्रैल 25	बुधवार	बैशाख कृष्ण-03	
17 अप्रैल 25	गुरुवार	बैशाख कृष्ण-04	
18 अप्रैल 25	शुक्रवार	बैशाख कृष्ण-05	गुड फ्राइडे
19 अप्रैल 25	शनिवार	बैशाख कृष्ण-06	
20 अप्रैल 25	रविवार	बैशाख कृष्ण-07	
21 अप्रैल 25	सोमवार	बैशाख कृष्ण-08	
22 अप्रैल 25	मंगलवार	बैशाख कृष्ण-09	पंचक 7.52 रात से
23 अप्रैल 25	बुधवार	बैशाख कृष्ण-10	पंचक
24 अप्रैल 25	गुरुवार	बैशाख कृष्ण-11	पंचक, बरुथिनी ग्यारस
25 अप्रैल 25	शुक्रवार	बैशाख कृष्ण-12	पंचक, प्रदोष व्रत
26 अप्रैल 25	शनिवार	बैशाख कृष्ण-13/14	पंचक 2.39 रात तक
27 अप्रैल 25	रविवार	बैशाख कृष्ण-30	सतुवाई अमावस्या
28 अप्रैल 25	सोमवार	बैशाख शुक्ल-01	

डॉ. शुभम मिश्रा
(पीएचडी) पादप रोग

डॉ. के. एन. गुप्ता

वैज्ञानिक, पौधा रोग

तिल एवं रामतिल परियोजना

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

मूंग में कई तरह के कीटों से व्यापक नुकसान फसल को होता है। समय रहते इस पर नियंत्रण करने से किसान भाई होने वाले नुकसान से बच सकते हैं। प्रस्तुत आलेख में मूंग में रोग प्रबंधन का उपाय बताया गया है।

एन्थेक्नोस-कोलेटोड्राइचुम लेन्डीमुथीएनम

लक्षण : फफूंदी पादप वृद्धि की किसी भी अवस्था में ऊपरी भागों पर संक्रमण कर सकता है। पत्तियों एवं फलियों पर गोलाकार, काले धब्बे बीच में गहरे एवं किनारों पर नारंगी दिखाई देते हैं। अधिक संक्रमण की अवस्था में प्रभावित भाग एवं सीडलिंग सूख जाती है।

प्रबंधन

- ▶ संक्रमित पौधों को नष्ट कर देना चाहिये।
- ▶ बीज का कार्बोक्सीन 37.5 प्रतिशत+थिरम 37.5 प्रतिशत का 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज दर से बीजोपचार करें।
- ▶ फसल चक्र अपनायें।
- ▶ खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर कॉपर औक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

बेक्टिरियल लीफब्लाइट- जैन्थोमोनास फैजियोलाई

लक्षण : पत्तियों के ऊपर अनेक भूरे, सूखे एवं उभरे हुये धब्बे दिखाई देते हैं। अधिक प्रकोप की स्थिति में अनेक धब्बे आपस में मिल जाते हैं एवं पीली पड़कर समय से पूर्व गिर जाती है। यह बेक्टिरिया बीज जनित होता है। तना एवं फलियां भी सर्वमित होती है।

प्रबंधन

- ▶ रोग मुक्त बीज का प्रयोग करें।
- ▶ फसल अवशेषों को नष्ट करें।
- ▶ बोनी से पूर्व बीज को 500 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के घोल में 30 मिनट रखें।
- ▶ 250 पीपीएम स्ट्रेप्टो साइक्लिन को 3-4 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड के साथ प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

सरकोस्पोरा लीफस्पॉट-सरकोस्पोरा कैनिसेन्स

लक्षण : यह मूंग का महत्वपूर्ण रोग है जो कई रूप में फसल को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है। पत्तियों पर अनेकों छोटे आकार के भूरे एवं किनारों पर लाल भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। इसी प्रकार के धब्बे शाखाओं एवं फलियों पर दिखाई पड़ते हैं।

प्रबंधन

- ▶ रोग प्रतिरोधी किस्में लगायें।
- ▶ अन्तर्वर्ती फसल लगायें।
- ▶ खेतों को साफ-सुथरा रखें।
- ▶ रोग मुक्त बीज का प्रयोग करें।
- ▶ पौधे से पौधे एवं कतार से तार की दूरी अधिक रखें।
- ▶ मल्लिचंग करें।
- ▶ फसल पर प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर करें।

लीफक्रिन्कल रोग-लीफकल वायरस

लक्षण : सर्वप्रथम रोग के लक्षण नयी पत्तियों पर क्लोरोसिस के रूप में दिखाई देते हैं। पत्तियां सिकुड़कर नीचे की ओर मुड़ जाती हैं। प्रभावित फसल की वृद्धि रुक जाती है तथा सूख जाती है। रोग मुख्य रूप से बीज या रोग ग्रस्त पत्तियों के द्वारा फैलता है।



- ▶ भूमि में गोबर की खाद 12.5 टन/हे. के हिसाब से उपयोग करने पर रोग को कम करने में सहायक होता है।
- ▶ रोगग्रस्त फसल अवशेषों को नष्ट करें।
- ▶ ट्राइकोडर्मा विरिडि 4 ग्राम/कि.ग्रा. या स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स 10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज या कार्बोक्सीन 37.5 प्रतिशत+थिरम

मूंग में रोग प्रबंधन

प्रबंधन

- ▶ प्रभावित फसल के भागों के लगभग 40-50 दिनों तक अलग कर नष्ट कर दें।
- ▶ समय पर बोनी करें।
- ▶ नीम के तेल या पेट्रोलियम आधारित तेलों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- ▶ कुछ प्राकृतिक शत्रु जैसे कि लेसविंग, बिग आईड बग, सफेद मक्खी की जनसंख्या को नियंत्रित करते हैं।
- ▶ मिश्रित फसलों उगाकर लाभदायक कीटों को बढ़ावा दें।
- ▶ रोग वाहक कीट थ्रिप्स के नियंत्रण के लिये एसीफेट 1 मि.ली./ली. या लैंडो सायहैलोथ्रिन का छिड़काव करें।

मैक्रोफोमिना ब्लाइट-मैक्रोफोमिना फैजियोलीना

लक्षण : 4 सप्ताह पुरानी फसल के तने के ऊपर सफेद केंकर के रूप में दिखाई देते हैं। यह धीरे-धीरे भूरे रंग के रूप में ऊपर की ओर बढ़ते हैं। पौधे छोटे रह जाते हैं। पत्तियां गहरी हरी, मुरझायी हुई एवं आकर छोटा हो जाता है। सर्वमित पौधे की सामान्य पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं। फूल एवं फलियां कम लगते हैं। यदि प्रभावित पौधों को लम्बवत नीचे की ओर चीरकर देखें तो अन्दर वाले ऊतकों में लालपन दिखाई पड़ता है एवं अन्दरवाली जड़ें सफेद दिखती हैं। रोगजनक बीज, भूमि रोगग्रस्त अवशेष आदि के द्वारा फैलता है।

प्रबंधन

- ▶ गर्मी में खेत की गहरी जुताई करें।
- ▶ फलस चक्र अपनायें।

37.5 प्रतिशत का 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज के हिसाब से बीजोपचार करें।

पीला मोजाइक रोग-मूंगबीन यलोमोजाइक वायरस

लक्षण : शुरुआत में नई पत्तियों के ऊपर हल्के बिखरे हुये पीले दिखाई पड़ते हैं, धीरे-धीरे धब्बे बड़े होकर पत्तियां पीली हो जाती हैं। रोगग्रस्त पौधे छोटे रह जाते हैं, देरी से परिपक्व होते हैं एवं उनमें बहुत कम फूल एवं फली बनती हैं। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है।

प्रबंधन

- ▶ पीला ट्रैप का प्रयोग करें
- ▶ रोग प्रतिरोधी किस्में लगायें।
- ▶ रोगग्रस्त पौधों को समय समय पर खेत से निकाल कर नष्ट करें।
- ▶ खेत की साफ-सफाई रखें।
- ▶ दैहिक कीटनाशी थायोमेथाक्जाम 25 /100 ग्राम/हे. का छिड़काव करें।

पावडरी मिल्ड्यू-इरीसाइफी पोलीगोनी

लक्षण : यह दलहनी फसलों का प्रमुख रोग है। पत्तियों एवं पौधे के अन्य भागों पर सफेद पावडरनुमा चकते दिखाई पड़ते हैं जो बाद में धीरे-धीरे आकार में बड़े होकर पत्तियों की निचली सतह पर गोलाकार रूप से लेते हैं। संक्रमण अधिक होने पर पत्तियों की दोनों सतहें पूर्ण रूप से सफेद पावडरी वृद्धि से ढंक जाती है। प्रकोपित भाग सिकुड़कर नष्ट हो जाते हैं। अधिक संक्रमण की दशा में पर्णाय भाग पीले होकर समय से पूर्व गिर जाते हैं। रोगग्रस्त फसल में जल्दी परिपक्वता आ जाती है एवं उपज कम हो जाती है।

प्रबंधन

- ▶ बीजों को मेटालेक्सिल (अप्रोन एस.डी.) 6 ग्राम या ट्राइकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।
- ▶ रोग की प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।
- ▶ बेहतर वायु संचार के लिये पौधों के बीच में जगह छोड़कर फसलों का रोपण करें।
- ▶ पहला धब्बा दिखाई देने पर संक्रमित पत्तियों को हटा दें।
- ▶ गैर संवेदनशील फसलों के साथ चक्रीकरण अपनाएं।
- ▶ अत्याधिक संक्रमण को रोकने के लिये सल्फर, पत्तियों पर नीम तेल का छिड़काव करें।
- ▶ रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैन्कोजेब+मैटालेक्सिल 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें, आवश्यकता पड़ने पर छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर दोहराएं।
- ▶ ट्राइमेफोन 125 ईसी या ट्राइडेमोर्फ 1 मि.ली./लि. का छिड़काव करें।

जड़ सड़न एवं पत्ती झुलसा-राइजोक्टोनिया सोलेनाई

लक्षण : रोगजनक के द्वारा बीज सड़न, जड़ सड़न, पदगलन सीडलिंग झुलसा आदि होते हैं। यह रोग मुख्यतः फली अवस्था में होता है। सर्वमित पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा उन पर भूरे अनियमित धब्बे दिखाई पड़ते हैं। तने के मुख्य भाग एवं जड़ काले रंग की हो जाती हैं तथा छाल आसानी से निकल जाती है। पौधा धीरे-धीरे सूखने लगता है।

प्रबंधन

- ▶ फली अवस्था में नमी की कमी न होने दें।
- ▶ ट्राइकोडर्मा विरिडि 4 ग्राम/कि.ग्रा. या स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स 10 ग्राम/कि.ग्रा. कार्बोक्सीन 37.5 प्रतिशत+थिरम 37.5 प्रतिशत का 2-3 ग्राम प्रति किग्रा बीज दर से बीजोपचार करें।
- ▶ स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स/ट्राइकोडर्मा विरिडी 2.5 कि.ग्रा. को है. 50 कि.ग्रा. गोबर खाद के साथ मिलाकर ड्रेनिंग करें।

रस्ट-यूरोमाइसीज फेजियोलाई

लक्षण : पत्तियों की निचली सतह पर फलियों एवं पत्तों पर गोलाकार लाल भूरे धब्बे दिखाई पड़ते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों की दोनों रस्ट के द्वारा ढंक जाती है। पत्तियां सिकुड़कर गिर जाती है जिससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रबंधन

- ▶ प्रमाणित स्रोतों से स्वस्थ बीजों का इस्तेमाल सुनिश्चित करें जैसे प्रताप मक्का।
- ▶ प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करें।
- ▶ खेतों को खरपतवार और अवांछित पौधों से मुक्त रखें।
- ▶ रोपण तिथि में बदलाव करें।
- ▶ नीम के तेल, जेट्रोपा के तेल या सरसों के तेल का छिड़काव करने से रोग नियंत्रित रहता है।
- ▶ क्लोरोथालोनिल 0.2 प्रतिशत का अंकुरण के 30 दिन बाद घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ▶ रोग के लक्षण दिखाई देते ही 200 मिली प्रोपीकोनेजोल 25 ई.सी. या पायराक्लोट्रोबिन प्रति लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। रोग के प्रकोप और फैलाव को देखते हुए दूसरा छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल में करें।

● डॉ. के. एन. गुप्ता
वैज्ञानिक, पौधा रोग
तिल एवं रामतिल परियोजना

● डॉ. शुभम मिश्रा
(पीएचडी) पादप रोग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

नाडेप कम्पोस्ट विधि कम से कम गोबर का उपयोग कर अधिक से अधिक मात्रा में खाद बनाने की एक उत्तम पद्धति है। इस पद्धति द्वारा मात्र एक गाय के वार्षिक गोबर से 80 से 100 टन अर्थात लगभग 150 गाड़ी खाद प्राप्त किया जा सकता है। इस विधि से तैयार खाद में नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की उपलब्धता निम्नानुसार होती है :-

नत्रजन	स्फुर	पोटाश
0.5 से 1.5 प्रतिशत	0.5 से 0.9 प्रतिशत	1.2 से 1.4 प्रतिशत

नाडेप विधि के शोधकर्ता महाराष्ट्र राज्य यवतमाल जिले के कृषक श्री नारायण राव पांडरी पांडे (नाडेप टॉका) हैं। इसलिए इस विधि से तैयार खाद को नाडेप कम्पोस्ट का नाम दिया गया है।

नाडेप कम्पोस्ट खाद बनाने का तरीका

नाडेप कम्पोस्ट टॉका (हौदी)

जमीन के ऊपर ईंट का एक आयताकार टॉका बनाया जाता है, जिसकी दीवारें 9 इंच चौड़ी होती हैं। टॉके के अंदर का माप लम्बाई 12 फिट, चौड़ाई 5 फिट, ऊंचाई 3 फिट (180 घन फिट) होता है। ईंटों की जुड़ाई मिट्टी से की जा सकती है। सिर्फ आखरी रद्दा सीमेंट से जोड़िये, ताकि टांका गिरने का डर नहीं रहेगा। टांके को फर्स ईंट, पत्थर के टुकड़े डाल कर घुम्मस कर सीमेंट से पक्का करें।

यह टॉका हवादार होना आवश्यक है क्योंकि खाद सामग्री को पकाने के लिए कुछ मात्रा में हवा की आवश्यकता होती है। इसके लिए टॉका बांधते समय चारों दीवारों में छेद रखे जाते हैं। ईंटों के हर दो रद्दों की जुड़ाई के बाद तीसरे रद्दे की जुड़ाई करते समय हर एक ईंट जुड़ाई के बाद 7 इंच का छेद छोड़कर जुड़ाई करें। इस प्रकार चारों दीवारों में छेद बनेंगे। छेद इस प्रकार रखिये कि पहली लाईन के दो छेदों के मध्य में दूसरी लाईन के छेद आवें और दूसरी लाईन के छेदों के मध्य में तीसरी लाईन के छेद आवें इस प्रकार तीसरे छेद एवं 9वें रद्दे में छेद बनेंगे। छेदों की संख्या बढ़ाने से खाद जल्दी पक सकती है।

इस टॉके को अंदर बाहर की दीवारों एवं फर्स को गोबर मिट्टी से लीप दें। टॉका सूखने के बाद ही प्रयोग करें। बरसात व अत्यधिक गर्मी में नाडेप टॉके के ऊपर अस्थाई छाया दें।

नाडेप कम्पोस्ट बनाने के लिए सामग्री

वानस्पतिक व्यर्थ पदार्थ - जैसे कि सूखे पत्ते, छिलके, डंठल, टहनियां जड़ें आदि 1400 से 1500 किग्रा. (400 घन फिट) इसमें प्लास्टिक, कांच, पत्थर नहीं रहना चाहिए।

गोबर - मात्रा 90 से 100 कि.ग्रा. (8 से 10 टोकरे) गोबर गैस संयंत्र से निकली स्लरी भी उपयोग में लायी जा सकती है।

सूखी छनी मिट्टी - खेत या नाले बगैर की मिट्टी लेवें। उपयोग के पहले इसमें से प्लास्टिक, कांच, पत्थर आदि खाद न बनने वाले पदार्थ निकाल लें। मिट्टी छान लें मात्रा 1750 किलो (120 टोकरे) गोमूत्र से सनी मिट्टी विशेष लाभदायक होती है।

पानी - ऋतुमान अनुसार कम ज्यादा होगा। वर्षा ऋतु में कम, ग्रीष्म ऋतु में अधिक मात्रा 1500 से 2000 लीटर/कम्पोस्ट खाद की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए गोमूत्र एवं पशुओं का मूत्र मिट्टी में मिलाकर उपयोग करें।

नाडेप कम्पोस्ट टॉका भरने की पद्धति

खाद सामग्री पूरी तरह एकत्र करने के बाद नीचे बताये क्रम से टांका भरे (क्रम बदल न करें) जिस तरह अचार डाला जाता है, उसी तरह नाडेप पद्धति से खाद सामग्री एक ही दिन में (ज्यादा से ज्यादा 48 घंटों में) पूरी तरह टांके में भरकर सील कर दी जाती है। आधा काम छोड़ देंगे तो कम्पोस्ट खाद बनने की क्रिया में बाधा आवेगी।

प्रथम भराई - टॉका भरने का काम शुरू करने से पहले

टांके के अंदर की दीवार एवं फर्स पर गोबर पानी का घोल छिड़ककर अच्छा गीला कर लें।

पहली परत - वानस्पतिक पदार्थ से पहले 6 इंच ऊंचाई तक भर दें। इस 30 घनफिट में 100 से 110 किलो सामग्री आवेगी। वानस्पतिक पदार्थ के साथ 3 से 4 प्रतिशत कड़वा नीम या पलास की हरी पत्ती मिलाना लाभप्रद होगा। इससे दीमक का नियंत्रण होगा।



होगा और रसायनिक खाद के दुष्ट चक्र से आप पूर्णतया छूट सकेंगे। यदि पहले ही वर्ष रसायनिक खाद नहीं देना हो तो यह नाडेप कम्पोस्ट की मात्रा तीन गुनी याने कम से कम 10 से 15 टन प्रति एकड़ देना चाहिए। इसके द्वारा 100 किलो नत्रजन, 50-60 किलो फॉस्फोरस, 130 किलो पोटाश और 970 किलो सूक्ष्म अन्नद्रव्ययुक्त, पोषण मिल सकता है लेकिन यह एक ही वर्ष में पूरा उपलब्ध नहीं हो सकता, क्योंकि कोई सेन्द्रीय खाद को स्वभाव पहले वर्ष में 33 प्रतिशत दूसरे वर्ष में (फसल में) 45 प्रतिशत और शेष 22 प्रतिशत तीसरे चौथे वर्ष में उपलब्ध होने का होता है।

नाडेप कम्पोस्ट को टॉके से निकाल कर खुली जगह में नहीं रखना चाहिए। कुछ दिन बाद में प्रयोग में लाना हो तो दबाकर ढेर लगाकर ढेर को घासफूस से ढककर उस पर बीच-बीच में थोड़ा पानी छिड़क कर नमी बनाये रखें।

नाडेप कम्पोस्ट की गुणवत्ता में वृद्धि के उपाय

नाडेप कम्पोस्ट की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए भराई करते समय प्रत्येक परत के ऊपर 4 से 5 किलो रॉक फॉस्फेट अथवा 5 किलो सिंगल सुपर फास्फेट का पावडर डाला जावे। प्रथम

नाडेप विधि से कम्पोस्ट का निर्माण

दूसरी परत - गोबर का घोल 125 से 150 लीटर पानी में 4 किलो गोबर घोल कर पहली परत पर इस प्रकार छिड़कें कि पूरी वनस्पति अच्छी तरह भीग जाए। गर्मी के मौसम में पानी का अंश अधिक रखें (गोबर की जगह गोबर गैस स्लरी लेना हो तो 2.5 गुनी याने 10 लीटर ली जावे)।

तीसरी परत - साफ, सूखी छनी मिट्टी भीगी हुई वनस्पति, परत पर वनस्पति के वजन की 50 प्रतिशत याने 40 से 60 किलो काली मिट्टी समतल बिछा दें। उस पर थोड़ा पानी छींट दें टांके को इस प्रकार तीन परतों के क्रम से टांके के मुंह के ऊपर से 1.5 फुट ऊंचाई तक झोपड़ीनुमा आकार में भरते जाइए, साधारणतया 11 से 12 तहों में टांका भर जाएगा अब टांके को सील कर दें। भरी सामग्री के ऊपर 3 इंच की मिट्टी (400 से 500 किलो मिट्टी) की तह जमा कर दें और उसे गोबर के मिश्रण से व्यवस्थित रूप से लीप दें इस पर दरारें पड़ें तो उनको लीपें।

द्वितीय भराई - 15 से 20 दिन में खाद सामग्री सिकुड़कर टांके के मुंह से 8-9 इंच अंदर (नीचे) जावेगी, तब पहिले की भराई की तरह वनस्पतिक पदार्थ, गोबर घोल, छनी मिट्टी की परतों से पुनः टांके के सतह से 1.5 फिट ऊंचाई तक पहले जैसा ही भर कर ऊपर 3 इंच की मिट्टी के परत देकर पहले जैसा लीप कर सील कर दें।

दक्षता - नाडेप कम्पोस्ट पक्व होने के लिए प्रथम भराई की तारीख से 90 से 120 दिन लगते हैं। इस पूरे समय में आर्द्रता बनी रहने के लिए और दरारें बंद करने के लिए गोबर, पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। आवश्यक लगे तो छेदों में भी पानी छिड़क करके इस पर दरारें न पड़ने दें। घास उगे तो उसे निकाल दें। नमी कायम रखें। यदि कड़ी धूप हो तो उस पर घास-फूस की चटाई से छाया कर दें या अस्थाई छप्पर बना दें जिससे धूप एवं वर्षा से संरक्षण मिल सके।

खाद की परिपक्वता

तीन-चार महीने में खाद गहरे भूरे रंग की बन जाती है और अब दुर्गन्ध समाप्त होकर एक अच्छी खुशबू आती है। खाद सूखना नहीं चाहिए। इसमें 15 से 20 प्रतिशत नमी रहना ही चाहिए। बोनी के साथ बुआई पद्धति से इस एक टॉके में से निकाला खाद 6-7 एकड़ भूमि को दिया जा सकता है। साधारणतया एक टॉके से 3 टन (लगभग 6 बैलगाड़ी) अच्छा पका खाद मिलता है।

खाद के उपयोग की पद्धति

यदि आपके पास नाडेप कम्पोस्ट की पर्याप्त मात्रा है तो प्रति एकड़ प्रतिवर्ष 3 से 5 टन खाद बोनी के 15 दिवस पूर्व खेत में फैलाकर बखर चलाकर मिट्टी में मिला देना चाहिए। इस प्रकार से आप देखेंगे कि तीन वर्ष में आपको इसका पूरा लाभ प्राप्त

भराई के दो ढाई माह बाद जब टांके के अंदर का तापमान कम हो जाता है तब दो किलो स्फुर घोलक (पी.एस.बी.) पानी में घोलकर टांके के ऊपर से जगह गोल गड्ड सब्बल या बॉस से बनाकर उसमें भर दिया जावे। इससे रॉक फास्फेट का स्फुर घुलनशील अवस्था में प्राप्त हो जाता है।

नाडेप कम्पोस्ट की विशेषता एवं लाभ

नाडेप पद्धति से एक किलो गोबर से 30-40 किलो उत्तम जीवाणु खाद बन सकती है। कृषि भूमि में नत्रजन, स्फुर, पोटाश एवं सूक्ष्म तत्व की बड़ी मात्रा में उपलब्धि होती है। इस विधि से तैयार खाद परम्परागत तरीके से तैयार की गई खाद से 3-4 गुना अधिक प्रभावशाली होता है। नाडेप कम्पोस्ट पद्धति से किसान रसायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं के दुष्परिणाम से बचेगा और देश की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। नाडेप कम्पोस्ट पद्धति संपूर्णतया अप्रदूषणकारी है गांव के कूड़े कचरे का कल्याणकारी उपयोग होकर गांव स्वच्छ रहकर स्वास्थ्यवर्धक होगा तथा पोषक अन्न प्राप्त होगा। नाडेप कम्पोस्ट की तकनीक सरल होने से कोई भी किसान इसे थोड़े प्रशिक्षण से अपना सकता है और थोड़ी पूंजी लगाकर अपने आप में उद्यमी का स्वरूप प्राप्त कर सकता है। यह एक कल्याणकारी ग्रामोद्योग है।

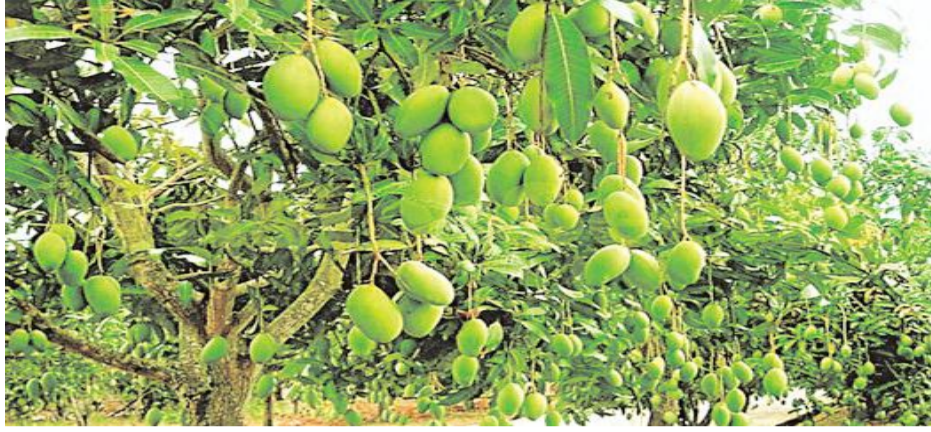
नाडेप फास्फो कम्पोस्ट

नाडेप फास्फो कम्पोस्ट नाडेप के समान ही कम्पोस्ट तैयार करने की विधि है अंतर केवल इतना है कि इसके बनाने में प्रत्येक परत के ऊपर 12-15 किलो रॉक फास्फेट फैलाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप कम्पोस्ट में फास्फेट की मात्रा बढ़ जाती है। यह भी जैविक एवं प्राकृतिक खाद है जिसका निर्माण फसल अवशेषों, पशुओं के गोबर, मूत्र तथा अन्य कार्बनिक अवशेषों के उपयोग द्वारा किया जाता है। इस कम्पोस्ट में नत्रजन 1.04 प्रतिशत, स्फुर, 4.5-6.5 प्रतिशत तथा पोटाश 1.5 प्रतिशत होता है।

भू-नाडेप/कच्चे नाडेप द्वारा कम्पोस्ट निर्माण

यह जमीन के अपर तैयार किया जाने वाली संरचना है इसमें सामग्री को व्यवस्थित कर 5 से 6 फुट ऊंचाई का एक आयताकार ढेर सा बना दिया जाता है तथा इसे चारों तरफ से गीली मिट्टी से लीप कर बंद कर दिया जाता है। बंद करने के 2-3 दिन बाद जब मिट्टी कड़ी हो जाये तब गोल या आयताकार 7-8 इंच गहरे तथा 9-9 इंच के अंतर पर छिद्र बना दिये जाते हैं जिससे वायुसंचार बना रहता है तथा आवश्यकतानुसार पानी डालते रहते हैं। इसमें भरने वाली सामग्री पक्के नाडेप की भांति ही है। यह कम्पोस्ट खाद 90-120 दिन में पककर तैयार हो जाती है अच्छी तरफ पकी खाद भुरभुरी, भूरे रंग की दुर्गन्ध रहित होती है।

- अंजली द्विवेदी
परास्नातक छात्रा (उद्यानिकी)
सी.बी.एस.एम.एस.एस, झींझक
सी.एस.जे.एम.यू. कानपुर (उ.प्र.)
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)



भा रत वर्ष के मैदानी भागों में उत्पन्न होने वाले सभी फलों में आम का प्रमुख स्थान है। उन्नत गंध, सुन्दर रंग एवं स्वादिष्टता के अलावा इसका पौष्टिक महत्व भी अच्छा होता है। इसमें विटामिन ए तथा सी की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। इसके फलों को ताजा खाने के अलावा चटनी, अचार अमचूर स्ववेश आदि तैयार करने में अधिकता से प्रयोग किया जाता है।

आम की उन्नत उत्पादन तकनीक

जलवायु: आम के लिये उष्ण तथा अपोष्ण दोनों प्रकार जलवायु अच्छी होती है। यह ऐसे क्षेत्र में अच्छी फसल देता है, जहां चार महीने (जून से सितम्बर) तक अच्छी वर्षा होती है और शेष आठ महीने मौसम साफ रहता है। फूल आते समय वर्षा न होना तथा पाला रहित क्षेत्र इसके उत्पादन के लिये बहुत ही उपयुक्त होते हैं।

भूमि: कंकरीली पथरीली व ऊसर भूमि को छोड़कर सभी प्रकार की भूमि में आम उगाया जा सकता है। इसके अच्छे उत्पादन के लिये पी.एच. मान 7.5 से अधिक नहीं होना चाहिये। भारी मिट्टी च दोमट मिट्टी जिसमें कार्बनिक पदार्थ की मात्रा काफी अच्छी हो तथा जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो, इसके लिये उपयुक्त रहती है। साथ ही इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि आम के बगीचे के डेढ़ किलोमीटर तक कोई ईंट का भट्टा नहीं हो।

उन्नत किस्में

- अगेती- बाम्बेग्रीन, केसर
- मध्यम-लंगड़ा, दशहरी, मल्लिका, आम्रपाली
- पिछेती- चौसा व फजली
- बोम्बेग्रीन:** यह मध्यम आकार, नीचे से चपटा, छिलका पतला, चिकना व हरा रेशे रहित, सुगन्ध युक्त व गुठली मध्यम आकार की होती है। फल जुलाई में पकता है।
- केसर:** फल मध्यम आकार के होते हैं।
- दशहरी:** फल आकार में छोटे व मध्यम होते हैं। इनका छिलका मोटा व पीला, गुदा पीला व रेशे रहित होता है। अच्छी मिठास वाले इस फल की गुठली पतली होती है। इसकी भण्डारण क्षमता अच्छी होती है।
- लंगड़ा:** यह फल मध्यम आकार का होता है। इसका छिलका मोटा, चिकना व हरा गुदा सख्त, रेशे रहित, रंग पीला, मिठास युक्त होता है। इसकी गुठली मध्यम आकार की होती है।
- मल्लिका:** नीलम व दशहरी के संकरण से बनी हुई नियमित फलन वाली यह किस्म हर साल फल देती है।

आम्रपाली: यह किस्म दशहरी तथा नीलम के संकरण से तैयार की गई है, यह हर वर्ष फल देती है तथा कम ऊंचाई तक बढ़ती है।

फजली: आकार बड़ा छिलका औसत से मोटा व हरा, रेशे रहित, सुगन्धित गुठली बड़ी होती है। फल अगस्त में पकते हैं।

दशहरी: इसका चयन दशहरी किस्म से किया गया है। जिसकी पैदावार दशहरी से 38 प्रतिशत अधिक होती है एवं 15 दिन बाद

खाद एवं उर्वरक				
पौधों को खाद एवं उर्वरक निम्नलिखित तालिका के अनुसार				
पौधों की आयु	मात्रा गोबर की खाद	प्रति पौधा (किलोग्राम में)		
		यूरिया	सुपर फास्फेट	म्यूरेट ऑफ पोटाश
प्रथम वर्ष	10	0.200	0.250	0.300
द्वितीय वर्ष	20	0.300	0.500	0.300
तृतीय वर्ष	40	0.400	1.00	0.600
चतुर्थ वर्ष	60	0.800	2.00	1.200
पंचम वर्ष	80	1.200	2.500	1.800
छठवां वर्ष व बाद में	100	1.600	2.750	2.400

गोबर की खाद, सुपर फास्फेट तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा जून माह के अंत में वर्षा शुरू होने पर दें। यूरिया की आधी आधी मात्रा फरवरी माह में दें। फूल आने के बाद 0.3 प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव करना चाहिये।

पकती है।

पौधे लगाने की दूरी एवं पौधों की संख्या

कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 मीटर रखनी चाहिये। इस दूरी के हिसाब से प्रति हेक्टेयर 100 पौधे लगते हैं। आम्रपाली व मल्लिका की कतार से कतार व पौधे से पौधे की दूरी 5 गुणा 5 मीटर रखें। इस अंतराल पर 400 पौधे प्रति हेक्टेयर आयेंगे।

खेत की तैयारी

अप्रैल-मई के महीने में निश्चित दूरी पर 1 गुणा 1 गुणा 1 मीटर आकार के गड्डे खोद लेने चाहिये। गड्डे को एक महीने खुला रखें। इसके बाद गड्डे से निकली ऊपरी मिट्टी में 30 -50 किलो गोबर की खाद, एक किलोग्राम सुपर फास्फेट, 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं 50-100 ग्राम, क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत मिलाकर गड्डों को भर देना चाहिये।

पौधे लगाने की विधि

आम के रोपण का सबसे उपयुक्त समय जुलाई से सितंबर है। कलमी पौधे लगाने समय ध्यान रखें कि मूलवृन्त एवशाखा के जोड़ वाला भाग भूमि की सतह से 15-20 सेमी ऊपर रखें। पौधों को इतना गहरा लगाना चाहिये जितना नर्सरी में लगा हुआ था। पौधों को लगाने के बाद अच्छी तरह से चारों ओर से दबा देना चाहिये।

सिंचाई एवं निदाई गुड़ाई

रोपाई के बाद गर्मियों के प्रति सप्ताह व सर्दियों में 15 से 20 दिन के अंतर पर सिंचाई करते रहना चाहिये। फलते समय पौधों को फूल आने से फल बैठने तक सिंचाई नहीं करनी चाहिये। फल लगने के पश्चात नियमित सिंचाई करें। आवश्यकतानुसार पौधों के थालों में गुड़ाई करनी चाहिये। वर्ष में दो बार वर्षा से पहले एवं फूल आने से पूर्व पेड़ों के बीच खाली जमीन की जुताई करनी चाहिये।

अन्तराशस्यन

प्रारंभ के तीन वर्षों तक उद्यान तक कुष्माण्ड कुल की सब्जियों के अतिरिक्त सभी प्रकार की सब्जियां ली जा सकती हैं।

फलों की तुड़ाई तथा उपज

जब फल अपना पूरा आकार ग्रहण कर ले तथा रंग गहरे हरे से हल्का हरा होने लगे तो उन्हें तोड़ लेना चाहिये। ऐसे फलों को सूखी पत्ती, धान का सूख पुआल या कागज की तह में दबा लेना चाहिये ताकि फल पक जाये। दस वर्ष के वृक्ष से औसत 400-500 फल प्राप्त होते हैं। बीस से चालीस वर्ष की उम्र में 1000-3000 तक फल प्राप्त होते हैं।

प्रमुख कीट

आम का फुदका (हॉपर): यह कीट फूलों, कोमल फलों एवं पत्तियों से रस चूसता है। इसके अलावा यह कीट एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ निकालता है तथा एक काला कवक (शूटी मोल्ड) लग जाता है। नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1 मिली/लीटर या क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. 1.5 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। प्रथम छिड़काव फूल आने से पहले तथा दूसरा छिड़काव जब फल मटर के दाने के बराबर हो जाये तब करें।

मिली बग: इसके शिशु कीट वृक्ष की कोमल टहनियों एवं फूलों का रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। (शेष पृष्ठ 10 पर)

खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

क्या आपकी जमीन से खेती करने का फायदा कम आकस्मिक मिल रही है जिससे आप अपने खेती के खर्च को पूरा कर सकें? क्या आप खेती से निराश हो गए हैं और एक नया उपाय खोज रहे हैं जो आपको अधिक लाभ दे सके? यदि हाँ, तो हम आपको एक नया आउटलेट लेकर आए हैं। आपकी खाली जमीनों, खेतों से खाली नालों-बन्दों को बर्बाद करने के लिए हमारे साथ जुड़ें। हम आपको जमीन के चयन से लेकर फसल लगाने, उत्पादन और उत्पादन के शत-प्रतिशत निष्पन्न तक की पूरी पैकेज का-काली और मार्केटिंग प्रदान करेंगे।

हम आपसे एक खेती की बात कर रहे हैं जो आपको अधिक लाभ प्रदान कर सकती है। AT और BP के पौधों की खेती एक बहुत ही उपयुक्त विचार है, जो आपको अधिक मुनाफा दे सकती है। इन पौधों की विशेषता और पौषण के कारण, इससे बाजार में उतम मूल्य मिल सकता है और आपको अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलिया टीक और 800 काली मिर्च फसल की खेती कर के आप साल का लाखों रुपये कमा सकते हैं।



काली मिर्च के उत्पादन में लक्ष्मीनारायण के खेत ने देश में कृषक-नक सर्वप्रथम



- 30 सालों में 7 बार देश का सर्वश्रेष्ठ किसान का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक टिचानिर्देश।
- देश का सर्वप्रथम सर्वोत्कृष्ट ऑर्गेनिक हर्बल फार्मस के साथ ला दत्तेश्वरी हर्बल समूह का समर्थन और संयुक्त निष्पन्न
- कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ मिलेनियम फार्मर/रियल्टी फार्मर ऑफ इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है ला दत्तेश्वरी हर्बल समूह के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।



www.nothegods.com | fssai | SAMPDA

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

मुख्य कार्यालय: मां दत्तेश्वरी हर्बल ग्रुप

151, हर्बल इस्टेट, कोडागांव बरतत (छत्तीसगढ़) 494226

प्रासासकीय कार्या. : जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अरासन नगर

(पुरानी अरासन कॉलोनी) टिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013

सूचना : कृपया कार्यालयीन दिवसों में सुबह 11:00 से 5:00 राख्य के बीच ही फोन करें।

मो. : 9425265105

फोन : 0771-2263433

हैप्पी सीडर से करें नरवाई प्रबंधन : श्री कंधाना

भोपाल। किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंधाना ने कहा है कि नरवाई जलाने से खेतों की उर्वरा शक्ति को नुकसान पहुंचता है। नरवाई जलाने के नुकसान को रोकने के लिए कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि हैप्पी सीडर द्वारा फसल काटकर सीधे बोनी की जाती है।

नरवाई से मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। नरवाई मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ जोड़ती है, जिससे मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता और उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इसके साथ ही नरवाई मिट्टी की सतह को ढंकर रखती है, जिससे वाष्पीकरण कम होता है और मिट्टी में नमी बनी रहती है। श्री कंधाना ने कहा कि नरवाई खरपतवारों के अंकुरण और विकास को दबाने में भी मदद करती है। यह मिट्टी को बहने और कटने से बचाती है और धीरे-धीरे विघटित होकर मिट्टी में पोषक तत्वों को वापस लाती है। नरवाई मलच के रूप में कार्य करती है, जो शून्य जुताई जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। ग्रीष्मकालीन मूंग की बोनी में नरवाई प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पिछली फसल की कटाई के बाद नरवाई को खेत में ही छोड़ दें और यदि नरवाई बहुत अधिक है, तो उसे काटकर फैला दें ताकि मूंग की बोनी में आसानी हो। यह विधि मिट्टी की नमी



बनाए रखने, खरपतवारों को दबाने और मिट्टी के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती है। शून्य जुताई विधि अपनाने वाले किसानों के लिए यह विधि महत्वपूर्ण है।

पिछली फसल की कटाई के बाद खेत की हल्की जुताई करें ताकि नरवाई मिट्टी में मिल जाए। यह नरवाई के विघटन को तेज करता है और मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ाता है। श्री कंधाना ने कहा कि किसानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि अधिक जुताई मिट्टी के

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती है। यदि मेड़ और कुंड विधि से मूंग की बोनी की जा रही हो तो नरवाई को काटकर मेड़ों पर लगाया जा सकता है। यह खरपतवार नियंत्रण और नमी संरक्षण में मदद करेगा।

नरवाई को अन्य जैविक कचरे के साथ मिलाकर खाद बनाई जा सकती है। यह खाद मूंग की फसल के लिए एक उत्कृष्ट जैविक उर्वरक के रूप में काम करेगी। यदि पिछली फसल में कोई बीमारी या कीट हों तो नरवाई को खेत में छोड़ने से पहले उसे उपचारित करना चाहिए।

हैप्पी सीडर को किसान ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर खरीद सकते हैं। इसकी अनुमानित राशि 2 लाख 60 हजार से 2 लाख 85 हजार रुपये है। इस पर 1 लाख 5 हजार रुपये का अनुदान भी कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा दिया जाता है।

गेहूं उपार्जन के लिए 15.33 लाख किसानों ने कराया पंजीयन

अब तक 26.73 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन

भोपाल। प्रदेश में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन हेतु पंजीयन की प्रक्रिया 20 जनवरी से 9 अप्रैल 2025 तक संचालित की गई। इस अवधि में प्रदेश के 15 लाख 33 हजार किसानों ने अपना पंजीयन कराया।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि उपार्जन की अवधि 15 मार्च से 5 मई 2025 तक निर्धारित है। किसानों को गेहूं के लिए 2,425 प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के साथ 175 प्रति क्विंटल बोनस, कुल 2,600 प्रति क्विंटल का भुगतान किया जा रहा है।

श्री राजपूत ने बताया कि प्रदेश में 3,528 उपार्जन केंद्रों की स्थापना की गई है। अब तक कुल 3.09 लाख किसानों से 26.73 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया गया है। इसमें से 24.44 लाख मीट्रिक टन का परिवहन तथा 21.86 लाख मीट्रिक टन का भंडारण किया जा चुका है। श्री राजपूत ने बताया कि अब तक किसानों को 5,027 करोड़ का भुगतान किया जा चुका है। शेष भुगतान जल्द ही पूर्ण कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को समय पर उचित मूल्य और पारदर्शी व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए संकल्पबद्ध है। उपार्जन प्रक्रिया को सरल, व्यवस्थित और किसान हितैषी बनाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं।

सहकारिता मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ राज्य स्तरीय सहकारी सम्मेलन

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री शाह भोपाल के रविन्द्र भवन में राज्य स्तरीय सहकारी सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। केन्द्रीय मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मध्यप्रदेश डेयरी फेडरेशन के मध्य अनुबंधों का आदान प्रदान हुआ।

केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा है कि देश में कृषि, पशुपालन और सहकारिता के क्षेत्र में कार्य करने की अपार संभावनाएं हैं। पैक्स के सशक्तिकरण, डेयरी क्षेत्र को प्रोत्साहन, उत्पादन के क्षेत्र में सहकारिता, गतिविधियों के विस्तार, नगरीय सहकारी बैंक, जिला सहकारी बैंक और ग्रामीण बैंकों के सुचारू संचालन की व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया गया। सहकारी समितियां अब पेट्रोल पंप व गैस एजेंसी संचालन, रेल्वे टिकट बुकिंग, बिल जमा करने जैसी गतिविधियां भी संचालित कर रही हैं। एक समय था जब पैक्स केवल कम अवधि के लिए कृषि ऋण उपलब्ध कराते थे जिसमें उन्हें केवल आधा प्रतिशत लाभ होता था। वर्तमान में पैक्स 30 से अधिक गतिविधियों में संलग्न हैं इससे उनकी आय भी बढ़ रही है। केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि प्राथमिक कृषि सहकारी साख समिति और डेयरी व मछुआरा गतिविधियों को जोड़कर एम-पैक्स बनाने का कार्य नए बायलॉज द्वारा संभव हो सका। इसके साथ ही केंद्र सरकार द्वारा 2500 करोड़ की राशि से सभी पैक्स का कंप्यूटराइजेशन किया गया। अब पैक्स, जिला सहकारी बैंक, राज्य व सहकारी बैंक के साथ-साथ नाबार्ड से भी जुड़े हैं। इसके साथ ही इनके ऑनलाइन ऑडिट की भी व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि किसानों द्वारा खुले बाजार में दूध बेचने पर उचित दाम



नहीं मिलता है अतः प्रत्येक गांव के किसानों को अधिक से अधिक संख्या में डेयरी के साथ जोड़कर दूध के विभिन्न उत्पाद निर्मित करने का लक्ष्य निर्धारित करना होगा।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री प्रबंधन में पारस की तरह : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह के कुशल प्रबंधन की सराहना करते हुए कहा कि वे पारस की तरह हैं, उनके पास जो विभाग आ जाए वह सोना हो जाता है। उनकी उपस्थिति में हो रहे अनुबंध से प्रदेश में नई संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। सहकारिता के क्षेत्र में अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। बहुउद्देशीय समितियों के माध्यम से प्रदेश में भी सहकारिता की गतिविधियों को बढ़ाया जा रहा है। सर्वहारा वर्ग के कल्याण के लिए राज्य सरकार ने अनेकों महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। अब सहकारी समितियों से पेट्रोल पंप, दवाई

की दुकान व अन्य गतिविधियां संचालित होंगी। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समित में फैक्ट्रियों को भी सहकारिता से चलाने के लिए अनुबंध हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए कहा कि दुग्ध उत्पादन हर घर की आय में वृद्धि का प्रमाणिक स्रोत है। प्रदेश में गौ-पालन और दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गौ-पालन पर अनुदान की व्यवस्था की गई है। राज्य सरकार ने दूध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा है। सरकार घर-घर गोकुल बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। किसानों की जिंदगी बेहतर करने के लिए सरकार गाय का दूध खरीदेगी।

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि आज का दिन प्रदेश के सहकारी आंदोलन और श्वेत क्रांति के लिए ऐतिहासिक है। राज्य सरकार ने सहकारिता के साथ निजी व शासकीय

भागीदारी को जोड़ते हुए सी.पी.पी.पी. के माध्यम से पहली बार देश में नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। पशुपालन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने अनुबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री शाह ने आज अनुबंध के माध्यम से मध्यप्रदेश को नई सौगात दी है। डेयरी विकास में गुजरात में किए विकास कार्य मध्यप्रदेश को नई गति प्रदान करेंगे।

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के निदेशक डॉ. निमेश शाह ने कहा कि एनडीडीबी, मध्यप्रदेश सरकार और 6 दुग्ध संघ के बीच सहकार्य अनुबंध (एमओयू) हो रहा है। राज्य सरकार ने संगठित बोर्ड के माध्यम से दूध उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने के लिए अनुबंध की सहमति प्रदान की है। इस अनुबंध से किसानों को प्रशिक्षण देना, दूध उत्पादों की मार्केटिंग सहित अनेक कार्य किए जाएंगे।

सी.पी.पी.पी. के अंतर्गत हुए अनुबंध

केन्द्रीय मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में सी.पी.पी.पी. के तहत मेजेस्टिक ग्रुप मंडीदीप के प्रबंध संचालक श्री विज्ञान लोढ़ा द्वारा पैक्स घाट पिपरिया जिला रायसेन के समिति प्रबंधक श्री भास्कर शर्मा के साथ पूसा बासमती धान के प्रोक्योरमेंट एवं कल्टीवेशन के लिये अनुबंध का निष्पादन हुआ। इसके साथ ही मैसर्स मशरूम वर्ल्ड अम्ब्रेला लिमिटेड के प्रबंध संचालक श्री समीर सागर द्वारा पैक्स सलामतपुर जिला रायसेन के समिति प्रबंधक श्री कुंवर सिंह दांगी के साथ नेपियर घास के कल्टीवेशन के लिये अनुबंध हुआ। कार्यक्रम में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, केन्द्रीय सहकारिता सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी, प्रमुख सचिव सहकारिता श्री अशोक बर्णवाल और अपर मुख्य सचिव पशुपालन श्री उमाकांत उमराव उपस्थित थे।

किसानों के विश्वास का प्रतीक ACE ट्रैक्टर

किसान सेवा में रत ACE ट्रैक्टर के उज्जैन स्टाकिस्ट मे. प्रेमनारायण जाट

उज्जैन। ट्रैक्टर उद्योग में शीघ्रता से नये सोपान रच रही एक्शन कंसल्टिंग इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) के उज्जैन स्थित स्टाकिस्ट मेसर्स प्रेमनारायण जाट किसानों एवं ACE ट्रैक्टर के डीलर्स को लगातार सेवाएं दे रहे हैं। श्री जाट पिछले 9 वर्षों से ACE ट्रैक्टर से जुड़े हैं। श्री जाट ने कृषक दूत को बताया कि ACE ट्रैक्टर का निर्माण किसानों की स्थानीय आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया है। उन्होंने कहा कि हमें गर्व है कि हम बीते 9 वर्षों से ACE कंपनी से जुड़े हैं और मध्य प्रदेश में इसके स्टॉकिस्ट के रूप में कार्यरत हैं।

ACE कंपनी का नाम आज विश्वसनीयता और दमदार प्रदर्शन का पर्याय बन चुका है। 18 HP से 90 HP तक की ट्रैक्टर रेंज में ACE किसानों की हर ज़रूरत को पूरा करता है। 45 HP मॉडल में जेटर और क्लॉस्कर-दोनों इंजन विकल्प उपलब्ध हैं, जो हर खेत की ज़रूरत के अनुसार फिट बैठते हैं।

बीते वर्ष में हमने 60 प्रतिशत की जबरदस्त



संचालक
प्रेमनारायण जाट



ग्रोथ दर्ज की और यह केवल शुरुआत है। इस वर्ष हमारा लक्ष्य और भी ऊँचा है, और हम पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ रहे हैं। मध्य प्रदेश का ट्रैक्टर बाजार तेजी से विस्तार कर रहा है, और ACE कंपनी इस अवसर को पहचान कर नए डीलर्स के साथ साझेदारी के लिए तत्पर है। अगर आप ट्रैक्टर व्यवसाय से जुड़ने या विस्तार करने का सपना देख रहे हैं तो यही सही समय है।

श्री जाट ने कहा कि डीलरशिप लेने का सुनहरा अवसर सीमित समय के लिए उपलब्ध है। हमें निरंतर मार्गदर्शन मिलता है ACE के सेल्स हेड श्री रविन्द्र खनेजा जी तथा जूनल हेड श्री मनोज गर्ग जी का, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन से हम

लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। हम अपने सभी डीलर्स का दिल से धन्यवाद एवं अभिनंदन करते हैं, जो इस सफलता की यात्रा में हमारे सहभागी रहे हैं। उन्होंने किसानों और डीलर्स का आह्वान किया कि ACE ट्रैक्टर के साथ जुड़िए और दीजिए अपने व्यवसाय को एक नई पहचान।

न्यूट्रीहर्ड पशुओं के लिये अत्यधिक लाभकारी पशु आहार

न्यूट्रीहर्ड तीन ग्रेड एन-30, एन-20 एवं एन-10 में उपलब्ध

इंदौर। उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी आरएमपीसीएल ने किसानों के साथ ही पशुओं की भी विशेष चिंता की है। इसी का परिणाम है कि कंपनी ने पशुपालक किसानों के लिये 'न्यूट्रीहर्ड' पशु आहार उपलब्ध करवाया है। न्यूट्रीहर्ड पशु आहार पशुओं के लिये विशेष लाभकारी एवं फायदेमंद पशु आहार है।

न्यूट्रीहर्ड में मिनरल्स एवं प्रोटीन का विशेष मिश्रण होने से पशुओं को निरोगी बनाए रखने में सक्षम है। इसमें विशेष रूप से जिंक का मिश्रण होने से गर्भधारण किये पशुओं के लिये अत्यधिक फायदेमंद है। न्यूट्रीहर्ड का उत्पादन कंपनी के अत्याधुनिक कारखाने में किया जाता है। उन्नत भाप टेक्नालॉजी से तैयार किया गया न्यूट्रीहर्ड सभी पशुओं के लिये लाभकारी है। इसे पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत अत्याधुनिक संयंत्र में उत्पादित किया जाता है।

न्यूट्रीहर्ड पूरी तरह से एफ्लाटॉक्सिन फ्री कंपाउंड पशु आहार है। दूध देने वाला पशुओं के खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ती है साथ ही पशुओं में इम्युनिटी बढ़ाने का काम करता है।



यह पूर्णतः टॉक्सिन बाइंडर है। न्यूट्रीहर्ड विशेष रूप से कैल्शियम, विटामिन एडी-3, मैग्नीशियम, जिंक इत्यादि का मिश्रण है।

आरएमपीसीएल के हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पांडे ने बताया कि न्यूट्रीहर्ड तीन ग्रेड एन-30, एन-20 एवं एन-10 में उत्पादित किया जा रहा है। एन-30 ग्रेड 20 से 30 लीटर अथवा अधिक दूध देने वाली

गाय एवं भैंस के लिये है जिसमें 25 प्रतिशत प्रोटीन एवं 5.5 प्रतिशत फैट प्राप्त दूध से मिलता है। एन-20 ग्रेड 10 से 20 लीटर तक दूध देने वाली गाय एवं भैंस के लिये उपयोगी है। इसको खिलाने से प्राप्त दूध में 23 प्रतिशत प्रोटीन एवं 4.5 प्रतिशत फैट पाया जाता है। एन-10 ग्रेड 10 लीटर तक दूध देने वाली गाय एवं भैंसों के लिये है जिससे प्राप्त दूध में 20 प्रतिशत प्रोटीन एवं 3.5 प्रतिशत फैट की प्राप्ति होती है। न्यूट्रीहर्ड पशु आहार 50 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध करवाया गया है। अपनी विशेष गुणवत्ता के कारण न्यूट्रीहर्ड दुग्ध उत्पादकों की पहली पसंद बन चुका है।

आज के छात्र ही कल के सशक्त भारत का निर्माण करेंगे: श्री शुक्ल

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल का तृतीय दीक्षांत समारोह

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का तृतीय दीक्षांत समारोह उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल और परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने की। बतौर विशिष्ट अतिथि डॉ. राधाकांत पाढ़ी, एचएएल चेयर प्रोफेसर, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलूर, डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, सेक्रेटरी प्रायोजी निकाय, आईसेक्ट, डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, प्रो चांसलर आरएनटीयू, डॉ. आर.पी. दुबे, कुलगुरु, आरएनटीयू, डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी, कार्यकारी उपाध्यक्ष, आईसेक्ट, डॉ. संगीता जौहरी, कुलसचिव, आरएनटीयू विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस मौके पर श्री शुक्ल ने कहा कि रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई है। यह संस्थान न केवल विद्यार्थियों को अकादमिक रूप से मजबूत बना रहा है, बल्कि उन्हें नैतिक मूल्यों से भी जोड़ रहा है। विश्वविद्यालय की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियां प्रदेश के लिए गौरव की बात हैं। उन्होंने कहा कि आज के छात्र ही कल के सशक्त भारत का निर्माण करेंगे। सरकार ऐसे संस्थानों को हरसंभव सहयोग देने के लिए



संकल्पित है। समारोह में उदय प्रताप सिंह ने कहा कि डिग्री केवल एक प्रमाण पत्र नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी का प्रतीक है। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय जिस प्रकार युवाओं को आत्मनिर्भर और नवाचारशील बना रहा है, वह प्रशंसनीय है। शिक्षा को अब रोजगार और उद्यमिता से जोड़ने की आवश्यकता है। इस संस्थान ने छात्रों को बहुआयामी कौशल प्रदान कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे देश की प्रगति में भागीदार बनें और अपने ज्ञान का सही उपयोग करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संतोष चौबे ने कहा कि रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षणिक आदर्शों पर कार्य करते हुए शिक्षा, अनुसंधान और संस्कृति का समन्वय प्रस्तुत कर रहा है। विश्वविद्यालय लगातार छह वर्षों से एनआईआरएफ रैंकिंग में अपनी उपस्थिति बनाए हुए है, जो इसकी शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि हम अपने छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। दीक्षांत समारोह में वर्ष 2022, वर्ष 2023 और वर्ष 2024 के कुल 362 उत्कृष्ट विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं।

किसानों की सेवा में समर्पित श्रीराम बीज भंडार

(उमाशंकर तिवारी)

मधुसूदनगढ़। बीज एवं पेस्टीसाइड्स के विक्रेता श्रीराम बीज भंडार के संचालक प्रदीप कुशवाहा किसानों की सेवा में समर्पित हैं। श्री कुशवाहा द्वारा उच्च गुणवत्ता युक्त बीज, पेस्टीसाइड्स उपलब्ध कराना उनकी पहली प्राथमिकता है।



सरल स्वभाव के धनी प्रदीप कुशवाहा ने बताया कि दूर दराज तक के किसान हमारे इस संस्थान के माध्यम से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उपलब्ध कराना अपना कर्तव्य समझते हैं। श्री कुशवाहा ने बताया कि आसपास के लगभग 1500 किसानों से ज्यादा सीधा संपर्क है। श्रीराम बीज भंडार द्वारा जो भी कंपनी का उत्पाद विक्रय करते हैं उस कंपनी के अधिकारियों द्वारा उसका उपयोग करना एवं समय-समय पर बीमारियों का निरीक्षण कराना पहली प्राथमिकता है।

श्री कुशवाहा हमेशा किसानों को समझाईश देते हैं कि पेस्टीसाइड्स का उपयोग कम कर जैविक खाद का उपयोग करें ताकि अच्छा उत्पादन के साथ-साथ मुनाफा भी कमाया जा सके। श्रीराम बीज भंडार के संचालक द्वारा हमेशा किसानों को उचित सलाह के साथ-साथ उन्नत तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराने में एवं किसानों का समय-समय पर बीज उपलब्ध कराने में पूरा योगदान है।

इसी कारण आज गुना जिले के आसपास के क्षेत्रों में आसानी से अपनी पहचान बनाई है।

- डॉ. विवेकिन पचौरी
- डॉ. सुशील कुमार मिश्रा
- डॉ. अतुल श्रीवास्तव
- डॉ. विकास जैन

अजोला पानी पर तैरना वाला फर्न है। इसका प्रयोग पशु आहार एवं जैव उर्वरक के रूप में किया जाता है। अजोला पशुओं को चारे के रूप में पौष्टिक आहार प्रदान करता है।

अजोला में आवश्यक प्रोटीन, एमीनो अम्ल, विटामिन-ए, विटामिन-बी 12, बीटाकेरिटीन एवं खनिज जैसे कि कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैश, लोहा, तांबा, मैग्नीशियम इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अजोला में सभी आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं। इसमें लगभग 25 से 30 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है। यह अपने पोषक गुणों के कारण पशुओं के हरे चारे के लिये उत्तम विकल्प माना जाता है। इसकी खेती आसानी से एवं कम समय में की जा सकती है। यह बेहद ही कम समय में तैयार होने वाला हरा चारा है। पोषक तत्वों की उपलब्धता के आधार पर इसे ग्रीन गोल्ड भी कहा जाता है।

अजोला पशुपालन करने वाले किसानों के लिये प्रकृति प्रदत्त आकर्षक उपहार है। जो न केवल दुधारू पशुओं के लिये रोचक आहार है बल्कि दूसरे जैसे भेड़ पालन, बकरी पालन,



खरगोश पालन, मुर्गी पालन एवं बटेर पालन करने वाले किसानों के लिये भी यह हरा चारा काफी उपयोगी है।

अजोला क्या है?

अजोला पानी की सतह पर तैरने वाला एक जलीय फर्न है। इनकी पत्तियों/पंखुड़ियों में नील हरित शैवाल (एनाबिना अजोलाई) सहजीवी के रूप में रहती है। जो वायुमंडल नत्रजन का यौगिकीकरण करती है। अजोला का इस्तेमाल पशुओं के हरे चारे के रूप में किया जाता है। साथ ही इसका इस्तेमाल जैव उर्वरक के तौर पर भी किया जाता है।

अजोला हरे चारे के रूप में है उपयोगी

पशुओं को स्वस्थ रखने तथा उनका दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिये हरा चारा का सेवन करना अति आवश्यक माना जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से दुधारू पशुओं के शरीर के भार के अनुसार इसकी आवश्यकताओं जैसे जीवन निर्वाह, विकास तथा उत्पादन आदि के लिये भोजन के विभिन्न तत्व जैसे- प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, खनिज, विटामिन तथा पानी आदि की आवश्यकता होती है। अच्छे दूध उत्पादन के लिये जरूरी है कि कम खर्च में दुग्ध उत्पादन बढ़ाया जायें। इस दृष्टि से

अजोला हरे चारे के रूप में आसान सस्ता एवं लाभकर है। इसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं। इसमें लगभग 25 से 30 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है।

अजोला के फायदे

- गायों को हरे चारे के रूप में अजोला खिलाने से दूध उत्पादन क्षमता बढ़ती है।
- चारे के रूप में इसके इस्तेमाल होने से पशुओं में बांझपन की दर को घटाया जा सकता है।
- मुर्गियों के लिये अजोला सबसे अच्छा चारा माना जाता है।
- इसके उत्पादन पर वातावरण एवं जलवायु का विशेष प्रभाव न पड़ने के कारण इसे आसानी से रबी एवं खरीफ में उगाया जा सकता है।
- धान की खेती में अजोला के प्रयोग से प्रति हेक्टेयर उपज में 1-2 टन की वृद्धि होती है।
- अजोला का उत्पादन करना अत्यंत आसान एवं सरल है। इसे गड्डों, तालाब, नदी एवं टब आदि में आसानी से उगाया जा सकता है। इसके उत्पादन के लिये किसी खास तरह की मिट्टी एवं जगह की आवश्यकता नहीं होती है।
- अजोला निश्चित सीमा तक रासायनिक उर्वरक का एक अच्छा विकल्प है।

- डॉ. विवेकिन पचौरी
- डॉ. सुशील कुमार मिश्रा
- डॉ. संध्या मुरे
- डॉ. विनिता सिंह

जैविक पशुपालन कृषि से अंतर्संबंधित पारिस्थितिकी मैत्रिक एक ऐसा प्रबंधन है जिसमें पशुओं को जो भी चारा व दाना खिलाये जाये वो सभी जैविक होना चाहिये। ये उत्पादन किसी भी संबंधित संश्लेषित रासायनिक पदार्थ जैसे-कीटनाशी, पीड़कनाशी, खरपतवारनाशी, भारी धातु तत्वों का सभी प्रकार की रासायनिक खादों जैसे यूरिया डाई अमोनियम सल्फेट, सिंगल सुपर फास्फेट आदि से पूर्णतः मुक्त होने चाहिये।

जैविक पशुपालन का उद्देश्य

- ▶ पर्याप्त मात्रा में अधिक गुणवत्तापूर्ण भोज्य पदार्थों का उत्पादन करना।
- ▶ भूमि की उर्वरकता को लम्बे समय के लिये बनाये रखना।
- ▶ जीन विविधता का संरक्षण करना।
- ▶ फसल उत्पादन व पशुपालन में संतुलन स्थापित करना।
- ▶ पशुओं को उनका प्राकृतिक स्वभाव प्रकट करने देना।
- ▶ जैविक पशुपालन के द्वारा मनुष्यों व अन्य प्राणियों को स्वस्थ रखना।



फायदे

- ▶ यह वातावरण में प्रदूषण के स्तरों को कम करके स्वास्थ्यवर्धक बनाता है।
- ▶ स्थायी कृषि व पशुपालन को बढ़ावा देता है।
- ▶ यह मृदा का स्वास्थ्यवर्धन स्थायी रूप से करता है।
- ▶ यह पशुओं व अन्य मशीनों के लिये ऊर्जा बचत करता है।
- ▶ संसाधनों के उपयुक्त उपयोग को सुनिश्चित करता है।

जैविक पशुपालन- क्या करें

- ▶ पशुधन फार्म को सामान्य पशुधन फार्मों से बिल्कुल अलग रखें।
- ▶ जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने के लिये पूर्णतः जैविक खाद प्रमाणीकृत एजेंसी से करवायें।
- ▶ कीटों व पीड़कों का नियंत्रण जैविक व भौतिक विधियों से करें।
- ▶ पशुओं की प्राकृतिक चारागाहों में चक्रिक क्रम में अधिक से अधिक चरायें।

▶ जैविक पशुधन उत्पादों की पैकेजिंग भी जैविक तरीके से करें।

क्या न करें

- ▶ चारा उत्पादन के लिये जेनेटिकली माडिफाइड बीजों का उपयोग न करें।
- ▶ पशुओं में जहां तक संभव हो एलोपैथिक दवाइयों का इस्तेमाल न करें।

(पृष्ठ 7 का शेष)

आम की उन्नत...

इसके नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत 50-100 ग्राम प्रति पेड़ के थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई में मिलावें। शिशु कीट को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए नवंबर माह में एल्काथिन की 30-40 सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी तने की चारों ओर लगाये एवं ग्रीस कर लेप करें। प्रभावित पौधों पर एसीफेट 1 मिलीमीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़के।

छाल भक्षक कीट: कीट नियंत्रण हेतु सुरंग से साफ कर केरोसिन का फोहा अंदर रख कर ऊपर से गीली मिट्टी से बंद कर दें। साथ ही प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1 मिली/लीटर घोल बनाकर छिड़काव करें।

प्रमुख रोग

पाउडरी मिल्ड्यू: रोगी पेड़ों की नई टहनियों, पत्तियों व पुष्पक्रमों पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है। रोग ग्रसित पुष्प व

कच्चे फल झड़ जाते हैं। इसके नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या केराथेन मिलीलीटर 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये। पहला छिड़काव फूल खिलने से पूर्व तथा दूसरा फल बनते समय करें।

श्याम वर्ण (एन्थ्रेक्नोज): पत्तियों पर धब्बे बन जाते हैं। नई टहनियों एवं शाखाओं पर भी धब्बे बनते हैं। फल एवं पत्तियां गिर जाती हैं। नियंत्रण हेतु रोगग्रस्त शाखाओं को काट कर नष्ट कर दें तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम या मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर अक्टूबर में 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

मालफॉरमेशन (बंधा रोग): रोगी पेड़ों की पत्तियां गुच्छों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। पुष्प कम बंधे फूलों या छोटी-छोटी पत्तियों के गुच्छों के रूप में बदल जाते हैं। रोगी भाग को काट कर नष्ट कर देना चाहिये एवं 200 पी.पी.एम. नेपथेलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव अक्टूबर माह में तथा इसका छिड़काव फूल आने से पहले करें।



- डॉ. किंजल्क सी. सिंह
 - डॉ. चन्द्रजीत सिंह
 - डॉ. एस.एस. शुक्ला
- कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

जैली निश्चित मात्रा में फल का रस, शक्कर एवं सिट्रिक अम्ल को निश्चित समय तक उबाल कर तैयार किया गया चिकना, स्वादिष्ट (मीठा खट्टा) चमकदार, पारदर्शी, आकर्षक, उपयोग में लाये गये फल के सुगंध से युक्त खाद्य पदार्थ है। जिसमें 60-65 प्रतिशत शर्करा, 1 प्रतिशत फल में उपस्थित अम्ल तथा 33-38 प्रतिशत जल उपस्थित होता है। यह एक ऐसा उत्पाद है जिसे, जब चम्मच से काटा जाये तो चम्मच से काटने का निशान, उत्पाद पर चम्मच को हटाने के बाद भी दिखे।

जैली निर्माण का उद्देश्य

आमतौर पर करौन्दा और अमरूद ऋतु विशेष में ही सेवन हेतु उपलब्ध होते हैं। अन्य ऋतुओं में भी इन फलों में उपस्थित पोषक तत्व का लाभ तथा स्वाद का आनन्द प्राप्त करने के लिये जैली जैसा परिरक्षित उत्पाद का निर्माण किया जाता है जो कि लम्बे समय में खाने योग्य अवस्था में रखा जा सकता है।

जैली निर्माण का सिद्धांत

जैली के निर्माण हेतु पैक्टिन (यह फलों में प्राकृतिक रूप से छिलकों के नीचे उपस्थित होता है तथा यह बाजार में भी उपलब्ध है) शक्कर एवं जल (जल में घुलनशील फल का रस) आवश्यक है जो आपस में जैल बनाते हैं। इस जैल में फलों का रस, बँधी हुई अवस्था में होने के कारण खाद्य पदार्थ को दूषित करने वाले सूक्ष्मजीवों को उपलब्ध नहीं हो पाता है, अतः जैली लंबे समय तक खराब नहीं हो पाती है जैली के निर्माण हेतु पैक्टिन (यह फलों में प्राकृतिक रूप से छिलकों के नीचे उपस्थित होता है तथा यह बाजार में भी उपलब्ध है) शक्कर एवं फलों का रस आवश्यक होता है।

जैली निर्माण की विधि

- ▶ साफ, स्वस्थ, आकर्षक, ताजे, सुगन्धित एवं अधपके फल जैसे अमरूद अथवा करौन्दा का चुनाव करें जिसमें आवश्यक मात्रा में पैक्टिन और अम्ल उपस्थित हों। ध्यान रहे कि कच्चे अथवा पके फलों का उपयोग जैली बनाने के लिये नहीं करें।
- ▶ फलों को साफ बहते हुये जल से 2 मिनट तक हाथ से रगड़कर धोयें। सुनिश्चित करें कि फल में किसी भी प्रकार की गंदगी न लगी हुई हो। फलों के डंठल एवं बीज इत्यादि चाकू की सहायता से निकाल कर साफ करें।
- ▶ अमरूद को पतले चिप्स के आकार में काट लें, करौंदे को दो भाग में लम्बवत् काट कर बीज निकाल कर अलग कर लें।
- ▶ अमरूद फल के चिप्स अथवा करौन्दे के टुकड़े को पूर्ण रूप से डूबने हेतु आवश्यक मात्रा में स्वच्छ पीने योग्य मीठे जल का उपयोग करें। गंज में इतनी मात्रा में पानी लें जितने में फल के कुछ ऊपरी सतह के चिप्स/टुकड़े ही बाहर निकालें बाकी सभी चिप्स/टुकड़े भली-भाँति पानी में डूब जायें। फल के चिप्स/टुकड़े को मोटे पेंदे के गंज/भगौने में रखें। गंज/भगौने को मध्यम से तेज आँच में बिना चलाये इस



जैली निर्माण में सावधानी

प्रकार उबालें कि फल के चिप्स/टुकड़े जलें नहीं तथा पेंदी में नहीं लगें।

- ▶ सूती सफेद और साफ धुले हुये कपड़े की चार पर्त तैयार कर रस छानें।
- ▶ प्राप्त रस में से एक चम्मच फल का रस तथा दो चम्मच स्प्रीट मिलायें तथा एक से दो मिनट के लिये इस घोल को स्थिर रखें। रस एवं स्प्रीट के मिलने से गाढ़े (एक भाग में) अथवा पतले (दो या तीन भाग में) अवक्षेप (थक्के) का निर्माण होगा। जिससे रस में विद्यमान पैक्टिन की जाँच की जाती है। इस प्रक्रिया में यदि 1 गाड़ा थक्का बने तो समझें कि रस में आवश्यक मात्रा में पैक्टिन उपस्थित है। इस प्रक्रिया में यदि 2 से 3 थक्के बनें जो कुछ पतले हों तो समझें कि रस में पैक्टिन मध्यम मात्रा में उपस्थित है। यदि थक्के की अनेकों छोटी-छोटी बूँदें बनें तो समझें कि रस में पैक्टिन बहुत कम मात्रा में उपस्थित है। यदि रस में अधिक अथवा मध्यम मात्रा में पैक्टिन उपस्थित हो तो इस रस का उपयोग जैली के निर्माण के लिये किया जा सकता है, किंतु यदि रस में पैक्टिन की मात्रा कम है तो इस स्थिति में रस का उपयोग जैली बनाने में नहीं करें अन्यथा उत्तम गुणवत्ता की जैली का निर्माण नहीं हो पायेगा। घरेलू स्तर पर इस परीक्षण को करने की बहुत आवश्यकता नहीं है।
- ▶ गिलास की सहायता से रस नापें। यदि स्प्रीट परीक्षण किया है तो अवक्षेप गाढ़ा होने की स्थिति में तीन-चैथाई गिलास शक्कर प्रति गिलास मिलायें और यदि अवक्षेप पतला हो तो आधा गिलास शक्कर प्रति गिलास रस में मिलायें। स्प्रीट उपलब्ध न होने पर एक गिलास रस में आधा गिलास शक्कर प्रति गिलास रस की दर से मिलायें। शक्कर को रस में अच्छी तरह से घोलें। तत्पश्चात् घोल को मध्यम से तेज आँच पर उबालें। ध्यान रखें कि शक्कर साफ और अच्छी गुणवत्ता की हो।
- ▶ प्रति किलो फल के रस में 2 से 3 ग्राम सिट्रिक अम्ल को घोल में मिलायें। उपलब्ध न होने पर तीन से चार चाय के

चम्मच नींबू का रस घोल में मिलायें।

- ▶ सिट्रिक अम्ल की उपस्थिति में घोल की ऊपरी सतह पर शक्कर में उपस्थित गंदगी (स्कम), झाग के रूप में तैरने लगेगी। इस गंदगी को चम्मच द्वारा निकाल दें एवं जैली तैयार होने तक उबालें। जैली तैयार हो गई है इस बात को समझने के लिये जैली निर्माण का परीक्षण करें।

जैली निर्माण के परीक्षण की विधि

जैली निर्माण पूर्ण हो गया है, यह परीक्षण निम्नलिखित तीन में से किसी भी एक विधि से किया जा सकता है। शीट परीक्षण, प्लेट परीक्षण और बूँद परीक्षण।

शीट परीक्षण : घोल को चम्मच में लेकर ठंडा करें। चम्मच को तिरछा करें। यदि पूरा घोल एक साथ शीट (पर्त) के रूप में अंग्रेजी का 'यू' अक्षर बनाते हुये गिरे तो समझें कि जैली तैयार है।

प्लेट परीक्षण: घोल को एक चीनी मिट्टी की प्लेट में लेकर ठंडा कर प्लेट को तिरछा करें। यदि संपूर्ण घोल एक बूँद के रूप में नीचे की ओर लुढ़के एवं प्लेट पर घोल का अंश चिपका न रहे तो जैली को तैयार मानें।

बूँद परीक्षण: एक बूँद, ठंडी की हुई जैली को अंगूठे तथा अँगुली के बीच रखकर तार बनायें। यदि एक तार बनना प्रारम्भ हो गया हो तो एक कांच के पारदर्शी गिलास में सामान्य तापमान के जल में, ठंडे किये हुये घोल की बूँद डालें। यदि बूँद बिना फैले गिलास के सतह में बैठ जाती है एवं उंगली से दबाने पर भी बूँद की तरह ही लगती है तो समझें कि जैली तैयार हो चुकी है। इस प्रक्रिया को एक सफेद चीनी मिट्टी की प्लेट में भी पानी लेकर यह परीक्षण किया जा सकता है।

बोतल का निर्जमीकरण की विधि

बोतल का निर्जमीकरण करने का तात्पर्य है कि बोतल को स्वच्छ कर सूक्ष्मजीवों से मुक्त कर देना ताकि जब जैली बोतल में रखी जाये तो वह दूषित न हो। एक साफ धुला हुआ कपड़ा अथवा तौलिया, मोटे पेंदे के स्टेनलैस स्टील के गंज के तल में बिछायें। गंज में स्वच्छ एवं मीठा पीने योग्य जल लें। अच्छे डिटरजेंट से धुली हुई चौड़े मुँह की मोटे एवं मजबूत काँच की बोतल एवं ढक्कन को गंज में इस प्रकार रखें कि बोतल एवं ढक्कन पूर्ण रूप से जल में डूब जाये। बोतल एवं ढक्कन को मध्यम आँच में 15 मिनट तक इस प्रकार उबालें कि बोतल चटके नहीं। इसके उपरांत बोतल को उबले और ठंडे किये हुये पानी में तैयार पोर्टेणियम-मेटा-बाय सल्फाईट (परिरक्षक) के 2 प्रतिशत घोल से भी धोया जा सकता है जो कि बोतल और ढक्कन को निर्जमीकृत (सूक्ष्मजीवों से मुक्त) करेगा तथा जैली को अतिरिक्त रूप से परिरक्षित करेगा।

बोतल को कुछ देर तक स्वच्छ सतह पर उल्टा रख कर भीतर उपस्थित पानी को (यदि लगा हुआ हो तो) सुखा लें। ध्यान रखें कि बोतल और ढक्कन को किसी भी कपड़े अथवा हाथ से नहीं पोछें।

तैयार जैली को बोतल में भरना

बोतल को सामान्य तापमान वाली लकड़ी की सतह पर रखें। जैली को ठंडी हो कर जमने के पूर्व बोतल में उड़ें। बोतल को ढक्कन से बंद करें। यदि जैली को लम्बे समय के लिये परिरक्षित रखना चाहते हैं तो ढक्कन को मोम

से बंद करें। पिघले हुये मोम को ढक्कन और बोतल की चूड़ी के बीच, चारों ओर जमा दें ताकि बोतल वायुरूद्ध (सीलबंद) हो जाये। बोतल को स्वच्छ स्थान पर रखें। यह मोम विशेष प्रकार का होता है जिसे खाद्य पदार्थों के साथ उपयोग किया जा सकता है और इस प्रकार की मोम को फूड ग्रेड वैक्स कहते हैं। यदि जैली का व्यवसायिक उत्पादन करें तो जैली ठंडी होने के उपरांत, बोतल के ऊपर पूर्व से तैयार लेबल चिपकायें।

जैली खराब होने का कारण एवं निराकरण

जैली का सैट न होना: जैली का सैट होना, जैली का पूर्ण रूप से बनकर तैयार हो जाने की अवस्था को कहते हैं। पैक्टिन, अम्ल अथवा शक्कर की अधिकता अथवा कमी, मिश्रण का आवश्यकता से कम अथवा अधिक पकना अथवा धीमी आँच पर लंबे समय तक पकने के कारण, जैली उचित रूप से सैट नहीं हो पाती है। अतः आवश्यक है कि जैली निर्माण के लिये ऐसे ही का उपयोग किया जाये जिसमें, प्राकृतिक रूप से पैक्टिन एवं अम्ल (खट्टापन) की उचित मात्रा विद्यमान हो। उदाहरणस्वरूप जब अमरूद, अधपका, ताजा एवं सुगन्धित हो, ऐसी ही अवस्था में जैली बनाने के लिये उपयोग में लें। पैक्टिन, अम्ल अथवा शक्कर की कमी होने पर इनकी अतिरिक्त मात्रा जैली निर्माण के समय घोल में डालें। पैक्टिन का परीक्षण एवं जैली के निर्माण परीक्षण सावधानी पूर्वक करें। ध्यान दें कि पैटिन भी बाजार से क्रय कर जैली निर्माण के लिये उपयोग में लाया जा सकता है।

पैक्टिन की उपस्थिति का परीक्षण एवं जैली निर्माण

फलों में पैक्टिन की उपस्थिति का परीक्षण एवं जैली निर्माण के अंतिम बिंदु का परीक्षण, सावधानीपूर्वक करें। घोल को मध्यम आँच पर पकायें। बोतल से चम्मच द्वारा जैली निकालने पर, चम्मच के द्वारा जैली की सतह पर जैली के कटने का निशान बनना चाहिये जो कि इस ओर इंगित करता है कि जैली अच्छी तरह से बनी है।

अपारदर्शी जैली बनना

प्राप्त किये गये रस में गूदे के कण आने के कारण, कच्चे फलों का उपयोग करने के कारण, आवश्यकता से अधिक घोल को पकाने के कारण, जैली को आवश्यकता से अधिक ठंडा करने के कारण, जैली को अधिक ऊँचाई से बोतल में भरने के कारण, गंदगी युक्त झाग (स्कम) को न हटाने के कारण, पैक्टिन की अधिक मात्रा का उपयोग करने के कारण अपारदर्शी जैली का निर्माण होता है। पारदर्शी जैली बनने के लिये रस को अच्छी तरह से छानें। आवश्यक हो तो रस को तीन से चार घंटे तक स्थिर अवस्था में रखें एवं गूदे के कण बर्तन के निचली सतह में जमने के उपरांत ऊपर के साफ रस को अलग कर लें। मिश्रण को आवश्यकतानुसार पकायें। जैली को आवश्यक तापमान तक ठंडा करें। बोतल में जैली को अधिक ऊँचाई से न भरें। गंदगी युक्त झाग (स्कम) को पूर्ण रूप से निकालें तथा जैली बनाने हेतु अधपके, ताजा और सुगन्धित फलों का ही उपयोग करें जिनमें उचित मात्रा में पैक्टिन एवं अम्ल उपस्थित हो। ध्यान रहे कि पैक्टिन फल की बाहरी सतह के ठीक नीचे पाये जाते हैं। (शेष पृष्ठ 13 पर)

राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने हवा व पानी में उग रही फसलें देखी

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में परंपरागत खेती को आधुनिक तरीके से किस तरह से किया जाए, इसका माडल देखने के लिए स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय संगठन मंत्री कश्मीरी लाल पहुंचे। जहां पर उन्होंने हवा और पानी में उगाई जा रही फसल तकनीक को देखा साथ ही किस तरह से परंपरागत खेती को आधुनिक तरीके से किया जा रहा है, इसे देखकर वह आश्चर्यचकित भी हुए। जिसको लेकर उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति डा. अरविंद कुमार शुक्ला व उनकी टीम की प्रशंसा करते हुए उन्हें बधाई दी और साथ ही कहा कि जिस तरह से कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर में नवाचार हो रहे हैं इस तरह के नवाचार हर विश्वविद्यालयों में भी होने चाहिए। संगठन मंत्री ने कहा कि इस तरह के नवाचार करना तभी संभव होगा जब उन संस्थानों में कुलपति डा. शुक्ला जैसा विचारक पहुंचेगा। डॉ.



अरविंद कुमार शुक्ला ने राष्ट्रीय संगठन मंत्री को परिसर में स्थित एरोपोनिक यूनिट और हाइड्रोपोनिक यूनिट का भ्रमण कराया।

भ्रमण के दौरान राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने कहा कि जिस तरह से कृषि भूमि सिकुड़ती जा रही है उसको देखते हुए इस तरह के नवाचार होना जरूरी। जिससे लोग कम जगह और कम लागत में खेती-बाड़ी कर मुनाफा कमा सकें। हाइड्रोपोनिक यूनिट लोग अपने घर में भी स्थापित कर जैविक पद्धति से सब्जियां उगा सकते हैं। इसमें खर्च भी

कम आता है और स्थान की आवश्यकता कम ही पड़ती है। राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने परिसर में तैयार हो रहे जैविक तालाब का माडल भी देखा और उसकी प्रशंसा की। कुलपति डा. शुक्ला ने परिसर में गांव की परिकल्पना के तैयार हो रहे माडल के बारे में बताया, जहां पर विद्यार्थी शोध कार्य कर सकेंगे और पर्यटन की दृष्टि से भी इसका फायदा मिलेगा।

इस मौके पर स्वदेशी जागरण मंच के क्षेत्रीय संगठन मंत्री केशव देवोलिया, विश्वविद्यालय के निदेशक

विस्तार सेवाएं डा. वाय.पी. सिंह एवं वैज्ञानिक डा. सुष्मा तिवारी मौजूद रहीं।

कुलपति डा. अरविंद कुमार शुक्ला ने बताया कि वृक्षा आयुर्वेद पर भी काम शुरू किया गया है। जिसमें एक खेत की मिट्टी को वृक्षा आयुर्वेद के सिद्धांतों के अनुसार तैयार किया जा रहा है जिससे उसमें प्राकृतिक तरीके से खेती की जा सके। इस पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने कहा कि यह सराहनीय पहल है इससे भारतीय संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा और यह लोग जानेंगे कि कृषि के क्षेत्र में भारत कितना अग्रणी था।

इस मौके पर स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय संगठन मंत्री कश्मीरी लाल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नाइट्रोजन गैस प्लांट का भी भ्रमण किया। जहां पर नाइट्रोजन गैस का निर्माण किया जाता है। प्लांट और माइक्रोबायोलोजी लैब देखकर उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला की प्रशंसा की।

अनाज भण्डारण सुरक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ग्राम रीठी एवं लोही में कृषकों के खेत का भ्रमण

रीवा। पौध संरक्षण समसामयिक सुझाव एवं वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश कुमार कृषि विज्ञान केंद्र रीवा द्वारा ग्राम रीठी एवं लोही में कृषकों के खेत का भ्रमण किया और अनाज भंडारण में सुरक्षा पर प्रशिक्षण दिया जिसमें बताया कि भण्डारण गृह में साफ-सफाई के साथ-साथ अनाज को नमी से बचाना चाहिए। कॉटन बैग को रासायनिक दवा से उपचारित करके धूप में सुखाना चाहिए।

भंडारण के समय दाने में 8 से 10 प्रतिशत से ज्यादा नमी नहीं होना चाहिए। भंडारण के उपरांत कीटों से बचाव के लिए समय-समय पर उचित जैव कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही साथ प्याज, टमाटर, भिंडी, कद्दूवर्गीय और बैंगन में भ्रमण कर उचित प्रबंधन पर

सलाह में प्याज में झुलसा रोग का प्रकोप देखा जा रहा है। जिसमें पौधों की पत्तियां ऊपर से पीली पड़कर सूखने लगती हैं। इसके नियंत्रण हेतु कैप्टान एवं हेक्साकोनोजोल की मिश्रित दवा की 30 ग्राम मात्रा प्रति टंकी या टेबुकोनाजोल 25.9 प्रतिशत ईसी की 25 एम एल प्रति टंकी की दर से प्रकोपित फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

बैंगन, टमाटर एवं भिंडी में लगने वाली इल्ली एवं चूसने वाले कीट के नियंत्रण के लिए थायोमैथोक्साम+ लैम्डासा-यहैलोथ्रिन की मिश्रित दवा की 10 मिली मात्रा प्रति टंकी डालकर छिड़काव करायें। प्रति एकड़ 13 टंकी इस प्रकार से तैयार दवाई घोल का छिड़काव करें।

रबी फसलों में पौध संरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रायसेन। मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति, भोपाल एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के संयुक्त तत्वाधान में आकांक्षी जिला विदिशा में क्रियान्वित बायोटेक किसान हब परियोजना के अंतर्गत ग्राम ग्राम सावनखेड़ी के कृषकों के लिए दहलनी व तिलहनी फसलों में कीट व रोग नियंत्रण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख डॉ. स्वप्निल दुबे, वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी व मंथन संस्थान के भगवान सिंह किरार प्रमुख रूप से उपस्थित थे।



नीम ऑयल जैविक कीटनाशकों के उपयोग की सलाह दी गयी। वर्तमान समय में कीटों के नियंत्रण के लिये बीजामृत, ब्रह्मस्त्र, अग्नेयास्त्र का उपयोग की जानकारी दी गयी। पौध संरक्षण वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी द्वारा फसलों के मित्र व लाभदायक कीट की पहचान व हानिकारक कीटों के लिये नीम तेल, एन.पी.वी. वायरस मात्रा 250 एल.ई. प्रति हेक्टेयर, व्यूवेरिया बेसियाना एवं बेसिलस थ्रूजेन्सिस मात्रा 1 किग्रा प्रति हेक्टेयर के उपयोग सम्बन्धी जानकारी दी गयी।

चने की फसल में छोटी

इल्लियों के नियंत्रण के लिये क्लोरीपाइरीफॉस 20 ई.सी. या क्विनालफॉस 25 ई.सी. मात्रा 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर एवं बड़ी इल्लियों के नियंत्रण के लिये फ्लूबेंडामाइड 39.35 एस.सी. मात्रा 150 मिली प्रति हेक्टेयर या स्पाइनेटोरम 11.7 एस.सी. मात्रा 450 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करने की सलाह दी गई। मसूर की फसल में रसचूसक कीट माहू, मच्छर के नियंत्रण के लिए थायोमिथाक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. या एसीटामिप्रिड 20 एस.पी. मात्रा 125 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग कर कीट नियंत्रण की जानकारी दी गई।

अमानक खाद बीज विक्रेताओं पर कार्रवाई के निर्देश

नर्मदापुरम। नर्मदापुरम संभाग के कमिश्नर कृष्ण गोपाल तिवारी ने कृषि विभाग के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की वह मृदा परीक्षण लैब को और अधिक सक्रिय करें अधिक से अधिक संख्या में मिट्टी के नमूने लैब में परीक्षण के लिए लाएं। उन्होंने अमानक खाद बीज विक्रेताओं पर हो रही अब तक की कार्रवाई को नाकाफी बताया और कहा की विभाग और सक्रिय होकर अमानक खाद बीज के विक्रेताओं पर कार्रवाई करें।

कमिश्नर ने निर्देश दिए की कृषि विभाग के अधिकारी रूटिन कार्य के साथ-साथ आगामी फसल के लिए खाद एवं बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करें।

श्री तिवारी ने कहा कि मूंग की फसल में किसान नरवाई हटाने के लिए सुपर सीडर एवं हैप्पी सीडर का उपयोग न कर बड़ी मात्रा में सफाया का उपयोग कर रहे हैं एवं नरवाई भी जला रहे हैं। नरवाई जलाने से एवं सफाया



का उपयोग करने से मिट्टी के पोषक तत्व समाप्त हो रहे हैं एवं पर्यावरण भी दूषित हो रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों को मक्का के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यदि किसान मक्का लगाएंगे तो उन्हें कमांड एरिया तक पानी दिया जाएगा। कमिश्नर ने कहा कि कृषि अधिकारी कार्यशाला एवं खेत पाठशाला आयोजित कर किसानों को मक्का की फसल लेने के लिए प्रोत्साहित करें। उल्लेखनीय है कि नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर कृष्ण गोपाल तिवारी किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, सहकारिता विभाग, उद्यानिकी विभाग, जिला मत्स्य विभाग,

पशुपालन विभाग और मारफेड विभाग की योजनाओं और कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। हरदा जिले के उप संचालक कृषि ने बताया कि जिले में 1 लाख 5 हजार हेक्टेयर पर मूंग की फसल लगाई जाती थी। इस वर्ष इसमें 20 हजार हेक्टेयर का रकबा कम कर इसमें मक्का की फसल लगाई गई है।

कमिश्नर श्री तिवारी ने पशुपालन विभाग की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए की पशुओं में फीमेल ईटीटी तकनीक एवं सेक्स ऑर्डर तकनीक को बढ़ावा देकर दुधारू पशुओं के जन्म पर विशेष रूप से फोकस किया जाए।

झाबुआ। कृषि विज्ञान केन्द्र में कृषि चौपाल कार्यक्रम के 5वें एपिसोड का सीधा प्रसारण का आयोजन किया गया जिसमें ठाकुर सिंह डुडवे, प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारी, अनिल कुमार शर्मा, निकरा परियोजना, चन्द्रशेखर लोखण्डे केवीके झाबुआ, राघवेन्द्र सिंह भदौरिया केवीके झाबुआ सहित झाबुआ जिले के उमरी, भूरीमाटी व सजेलीग्राम से आये 48 किसान सम्मिलित हुए।

कृषि चौपाल कार्यक्रम का सीधा प्रसारण



अनुसंधान परिषद के विभिन्न वैज्ञानिकों

द्वारा मखाने की खेती से किसानों को होने वाले वित्तीय लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं मखाने की खेती में आने वाली विभिन्न समस्याओं एवं उनके निवारण के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। साथ ही किसानों को विभिन्न फसलों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किये जाने वाले प्रयासों के बारे में बताया।

(पृष्ठ 11 का शेष) जैली निर्माण....

जैली में शक्कर के दाने बनना

जैली में अधिक शक्कर की मात्रा, जैली के अधिक सांद्र (गाढ़ी) अथवा सख्त होने के कारण अथवा जैली निर्माण में कम अम्ल वाले फलों के उपयोग के कारण जैली में शक्कर के कण बनते हैं। जैली में शक्कर के कणों के निर्माण को रोकने के लिये शक्कर की मात्रा नाप कर उचित मात्रा में ही शक्कर को रस में मिलायें। पैकिटन की उपस्थिति का परीक्षण एवं जैली निर्माण के अंतिम बिंदु का परीक्षण सावधानीपूर्वक करें। घोल को आवश्यकतानुसार पकायें एवं अम्ल की मात्रा की उपस्थिति के अनुसार ही फल का चुनाव करें। फलों में कम मात्रा में पैकिटन होने की स्थिति में रस में पैकिटन अलग से मिलायें तथा रस में पैकिटन की मात्रा की स्पिरिट विधि से करते रहें।

जैली से जल अलग होना

अम्ल की अधिकता, शक्कर अथवा घुलनशील ठोस पदार्थ की बहुत अधिक कमी, पैकिटन की आवश्यक से कम मात्रा तथा समय से पूर्व जैली बनने के कारण अथवा जैली को पूरी तरह से नहीं पकाने के कारण, जैली से जल अलग होता है। इसे वीपिंग जैली भी कहते हैं। अम्लता की अधिकता होने पर, अधिक पैकिटन वाले फलों का रस के उपयोग के कारण एवं रस में आवश्यकता से अधिक शक्कर का उपयोग करने के कारण तुलनात्मक रूप से रस में अम्ल की मात्रा कम हो जाती है। समय से पूर्व जैली के बनने से रोकने के लिये रस में लवण जैसे सोडियम सिट्रेट, डायसोडियम, हाइड्रोजन सिट्रेट अथवा घर में उपयोग होने वाला सादा नमक (सोडियम क्लोराइड) प्रति किलो रस में एक या दो चुटकी की दर से मिश्रित करें।

जैली को सड़ने से बचाना

जैली से जल अलग होने के कारण जैली में किण्वन हो सकता है एवं जैली सड़ सकती है। अतः जैली को किण्वन अथवा सड़ने से बचाने के लिये बोटल को निर्जिमीकृत करें एवं जल को जैली से अलग होने से बचायें जिसका उपाय ऊपर पाँचवें बिंदु में दिया जा चुका है। जैली को स्वच्छता पूर्ण वातावरण में बनायें। तैयार जैली को ठंडे स्वच्छ, सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

चिपचिपी एवं तार वाली जैली

चिपचिपी एवं तार वाली जैली में शक्कर की मात्रा की अधिकता अथवा अम्ल की मात्रा की कमी अथवा पैकिटन की मात्रा की कमी के कारण बनती है।

जैली को आवश्यकता से कम अथवा आवश्यकता से अधिक पकाने के कारण भी जैली चिपचिपी बनती है तथा जैली में अनावश्यक तार बनते हैं। इस स्थिति से बचने के लिये फलों के रस में पैकिटन की उपस्थिति की मात्रा का परीक्षण एवं जैली निर्माण का परीक्षण सावधानीपूर्वक करें और पैकिटनयुक्त, अधपके, ताजे और सुगन्धित फलों का उपयोग करें। आवश्यकता होने पर अतिरिक्त मात्रा में पैकिटन एवं अम्ल को घोल में मिलायें तथा उत्तम गुणवत्तायुक्त जैली बनायें।

सावधानियाँ

- ▶ जैली के निर्माण हेतु सिर्फ स्टेनलेस स्टील के बर्तन का ही उपयोग करें।
- ▶ जैली के निर्माण के लिये मीठे तथा बहते हुये सवच्छ जल का ही उपयोग करें।
- ▶ जैली के निर्माण के समय स्वच्छता के प्रति सजग रहें। नाखून कटे, हाथ साबुन से धुले एवं बाल तथा चूड़ियाँ कपड़े से बँधे हुये होने चाहिये।
- ▶ जैली के निर्माण में फलों का चुनाव सावधानीपूर्वक करें।

सामग्री

फल का रस-1 लीटर, शक्कर- 500 ग्राम, सिट्रिक अम्ल- 2 से 3 ग्राम अथवा नींबू का रस- चार चम्मच एवं पोटैशियम - मेटा-बाय सल्फाईट- 2 ग्राम, खाद्य पदार्थ के साथ उपयोग में लाये जा सकने वाला मोम तथा स्पिरिट।

जैली के निर्माण के लिये मात्रा के अनुसार फलों का वर्गीकरण

पैकिटन एवं अम्ल की अधिक मात्रा वाले फल: अधपके, ताजे और सुगन्धित अमरूद, करौंदा, कैथा, पटुआ या अम्बाड़ी खट्टा संतरा, आँवला, खट्टे अंगूर, नींबू, प्लम इत्यादि। ऐसे फल जैली बनाने के लिये पूर्ण रूप से उपयुक्त हैं। मध्य भारत में जैली बनाने के लिये सर्वाधिक उपयोग अमरूद, करौंदा और कैथे (कबीट) का होता है।

कम मात्रा में पैकिटन और अम्ल पाये जाने वाले फल: पका सेव, लोकार्ट, मीठे अंगूर, काले अंगूर, ब्लैक बैरी, पके एवं मीठे अमरूद, पके या मीठे संतरे, खट्टी चैरी (यह फल जैली बनाने के लिये अनुपयुक्त है)। यदि इन फलों से जैली बनानी हो तो फलों के रस में पैकिटन अलग से मिलायें।

अधिक पैकिटन किन्तु कम अम्ल की मात्रा वाले फल: सेव की विशेष किस्म जिनमें अम्ल कम होता है। कच्चे केले, खट्टी चैरी, अंजीर, नाशपाती, पपीता (इन फलों के रस में अम्ल मिश्रित कर जैली बनायी जा सकती है)।

कम पैकिटन किन्तु अधिक अम्ल वाले फल: खट्टी खुबानी, चैरी, आड़ू, अनानास, स्ट्रॉबेरी इत्यादि। इन फलों से जैली बनाने हेतु रस में अतिरिक्त पैकिटन मिश्रित करना आवश्यक है।

बहुत कम पैकिटन एवं बहुत कम अम्ल की मात्रा वाले फल: पकी खुबानी, अधिक पकी बेरी, पका आड़ू, अनार, रस बेरी, स्ट्रॉबेरी एवं अधिक पके अन्य फल। इन फलों का उपयोग जैली बनाने हेतु बिलकुल न करें। यदि फिर भी इन फलों का उपयोग जैली के निर्माण के लिये करना ही है तो फिर फलों के रस में अलग से अम्ल और पैकिटन मिलाना होगा।

जिले में गेहूं खरीदी कार्य सुचारु रूप से जारी

नर्मदापुरम। शासन के निर्देशानुसार रबी विपणन वर्ष 2025-26 में 15 मार्च से जिले के ई उपाजर्न पोर्टल पर पंजीकृत 64969 किसानों से समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी का कार्य किया जा रहा है।

जिला आपूर्ति अधिकारी रश्मि साहू ने यह जानकारी देते हुए बताया कि जिले में स्थापित 171 उपाजर्न केन्द्रों पर अब तक कुल 22784 किसानों के द्वारा अपना स्लॉट बुक किया गया है तथा 5870

किसानों से 59337 मीट्रिक टन की खरीदी की जा चुकी है। जिसकी भुगतान योग्य राशि 14.38 करोड़ है।

उन्होंने बताया कि परिवहन व्यवस्था को भी सुचारु रूप से संचालित किया जा रहा है, जिसमें कुल उपार्जित स्कंद के विरुद्ध 43778 मीट्रिक टन (80.84 प्रतिशत) मात्रा का परिवहन किया जा चुका है। वर्तमान में 42943 मीट्रिक टन उपज की मात्रा स्वीकृत हो चुकी है।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824

मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

अर्जुन इण्डस्ट्रीज

AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES

समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता

- ट्राली • टैंकर • कल्टीवेटर • बोनी मशीन • पल्टीप्लाऊ

लाम्बालेड़ा ओवरलैंड, बायपास चौराहा, वैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744



मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स (कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

- औषधीय • वन • सब्जी • फूल • बीज • स्प्रे पंप एवं पार्ट्स • कीटनाशक • जैविक खाद
- गार्डन टूल • जैविक उत्पाद • ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
- वितरक -** • निर्मल सीड्स, जलगांव • कलश सीड्स, जालाना • अंकुर सीड्स, नागपुर
- वेस्टर्न सीड्स, गुजरात • दिनाकर सीड्स, गुजरात • सर्टिड सीड्स, दिल्ली • फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना • स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई • जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर • स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर • अनु प्रोडक्ट्स लि. • श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

जैविक अपशिष्ट प्रबंधन प्रशिक्षण

डिंडोरी। कृषि विज्ञान केंद्र डिंडोरी के सभागार में टीएसपी के अंतर्गत आईसीएआर द्वारा स्वीकृत परियोजना अपशिष्ट के जैव रूपांतरण एवं उच्च मूल्य बायोमास उत्पादन के लिए ब्लैक सोल्जर फ्लाई के उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डिंडोरी जिले के विभिन्न ग्रामों के लगभग 50 आदिवासी कृषकों की भागीदारी रही।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कोट वैज्ञानिक परियोजना प्रमुख एवं आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एस.बी. दास ने आभाषी माध्यम से जानकारी देते हुए बताया कि के वीके डिंडोरी से प्रथम क्रियान्वयन ब्लैक सोल्जर फ्लाई उत्पादन एवं प्रशिक्षण परियोजना का किया जा रहा



है। भविष्य में इसका सकारात्मक प्रभाव व लाभ किसानों को मिल सके। उन्होंने बताया कि अपशिष्ट के जैव रूपांतरण एवं उच्च मूल्य बायोमास उत्पादन के लिए ब्लैक सोल्जर फ्लाई के उत्पादन पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन, जो टीएसपी के अंतर्गत आईसीएआर द्वारा स्वीकृत किया गया है, जबलपुर के अतिरिक्त पांच अन्य केंद्रों को भी परियोजना केंद्र के रूप में चिन्हित किया गया है।

इस पहल के अंतर्गत हमें प्रदर्शन इकाई की स्थापना करना है। यह इकाई अपशिष्ट जैव रूपांतरण एवं बायोमास

उत्पादन के लिए ब्लैक सोल्जर फ्लाई उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करेगी। परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिये एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना होगा।

कृषि विज्ञान केंद्र डिंडोरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पी.एल. अंबुल्कर ने कहा कि बीएसएफ का डिंडोरी जिले में शुभारंभ अवशिष्ट के जैव रूपांतरण एवं उच्च मूल्य बायोमास उत्पादन के क्षेत्र में एक नई कृषि क्रांति का शुभारंभ होगा।

कचरा से कंचन बनाने में यह तकनीकी मील का पत्थर

साबित हो सकती है। डॉ. अंबुल्कर ने कृषि विज्ञान केंद्र में संचालित हो रही विभिन्न किसान हितैषी उपयोगी कार्यों की विस्तार से जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में जबलपुर से आए वैज्ञानिक डॉ. राकेश सिंह मरावी द्वारा पावर पाइंट के माध्यम से विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। पी.एच.डी. छात्र मनीष गडेकर एवं मुन्झाती रामाकृष्णा द्वारा ब्लैक सोल्जर फ्लाई के उत्पादन की प्रदर्शन इकाई बनाने का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक पी.एल. अंबुल्कर, रेणु पाठक, अवधेश कुमार पटेल, श्वेता मसराम एवं कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति रही।

हर व्यक्ति प्रति दिन एक घण्टे श्रमदान करें: श्री सिलावट

जल संसाधन मंत्री ने तीखड नर्मदापुरम में किया पंप हाउस का भूमि-पूजन



भोपाल। जल संसाधन मंत्री तुलसी राम सिलावट ने नर्मदापुरम जिले के केसला विकासखंड के ग्राम पंचायत तीखड में झाड़ू बीडा उद्वहन सिंचाई परियोजना के पंप हाउस क्रमांक 2 के अंतर्गत 4 पंपों का भूमि-पूजन किया। ग्राम तीखड में आयोजित कार्यक्रम में श्री सिलावट ने पौध-रोपण कर पर्यावरण बचाने का संदेश भी दिया। झाड़ू बीडा सिंचाई परियोजना से 79 गांव के 19 हजार 858 किसान लाभान्वित होंगे। परियोजना की सिंचाई क्षमता 15 हजार 610 हेक्टेयर तक की है, जिसे 177, 58 करोड़ की लागत से निर्मित किया जाएगा।

श्री सिलावट ने कहा कि जल है तो कल है, जल से ही प्रगति है। जल है तो अन्नदाता किसानों का विकास भी है। जल का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पहले जब हम कहीं जाते थे तब अपने आस-पास तालाब, बावडी, कुंओं एवं नालों को जल से लबालब देखा करते थे। श्री सिलावट ने कहा कि वर्ष 2003 में मध्यप्रदेश में 07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती थी। अब शासन ने इसे बढ़ाकर 50 लाख हेक्टेयर कर दिया है। आगामी 2 साल में इसे बढ़ाकर 65 लाख हेक्टेयर एवं 5 साल में 1 लाख करोड़ हेक्टेयर तक कर दिया जाएगा।

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राण कर्माधिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
 मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
 E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

रबी फसलों की कृषि प्रणालियाँ मूल्य 40/-	फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 250/-	धान की उन्नत खेती मूल्य 20/-	मत्तियों की उन्नत तकनीकें मूल्य 100/-	फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/-	मत्तियों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 20/-	फसलों की खेती मूल्य 10/-
धान की उन्नत खेती मूल्य 100/-	पौधार्थन की खेती मूल्य 20/-	खरीफ फसलों की खेती मूल्य 50/-	कपास की खेती मूल्य 20/-	धान की खेती मूल्य 25/-	मधुमक्खन मूल्य 100/-	नकली धान मूल्य 100/-
खरीफ खेती मूल्य 10/-	रबी फसलों में आर्गेनिक खेती मूल्य 20/-	खरपाया प्रबंधन मूल्य 50/-	भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 20/-	कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/-	रत्नानी फसलों की खेती मूल्य 10/-	विषहारी फसलों की उन्नत खेती मूल्य 50/-
गुनाच की खेती मूल्य 100/-	काली की उन्नत खेती मूल्य 20/-	डेन्टर का रखरखाव मूल्य 50/-	मिर्च की उन्नत खेती मूल्य 10/-	काली का रोग उपचार मूल्य 100/-	मधुमक्खी पालन मूल्य 150/-	

मुख्य कार्यालय : एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
 E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राण कर्माधिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
 मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
 E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूप (अंकों में)..... (शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर..... एवं संस्था सील

देश भर में सहकारी क्षेत्र को और मजबूत बनाने की रणनीति

डेयरी समितियों से महिलाओं का सशक्तिकरण और बाल पोषण में सुधार कर सकती हैं

नई दिल्ली। सहकारिता मंत्रालय की शिलांग में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की समीक्षा बैठक में सहकारी क्षेत्र को और मजबूत बनाने और आधुनिक बनाने के लिए पहल और रणनीति तैयार करने पर चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुये सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी ने कहा कि



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में मंत्रालय सहकार से समृद्धि के विजन को साकार करने के लिए मजबूत अंतर्राज्यीय सहयोग के साथ सहकारी-नेतृत्व वाली आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

डॉ. भूटानी ने कहा कि श्वेत क्रांति 2.0 डेयरी क्षेत्र के माध्यम से ग्रामीण उत्थान के लिए शुरू की गई प्रमुख पहलों में से एक है। उन्होंने कहा कि हम असम, झारखंड और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों को डेयरी बुनियादी ढांचे के विस्तार में सहायता देने के लिए अमूल और एनडीडीबी जैसी संस्थाओं के साथ साझेदारी कर रहे हैं। पशुपालन की आर्थिक क्षमता अब पारंपरिक फसल की खेती से कहीं अधिक है।

बैठक में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों, सहकारी संघों के अधिकारियों, वित्तीय संस्थानों और नीति निर्माताओं सहित प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाया गया, जिससे ज्ञान के आदान-प्रदान और रणनीतिक तालमेल के लिए एक सहयोगी मंच तैयार

हुआ। राज्यों की समीक्षा सत्र में सहकारी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने और नवाचार और समावेशिता को बढ़ावा देने में एनसीईएल, एनसीओएल, बीबीएसएसएल, एनसीसीएफ और नेफेड जैसे राष्ट्रीय स्तर के सहकारी संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

मुख्य रूप से सहकारी समितियों के लिए बैंकिंग सेवाओं का विस्तार और माइक्रो-एटीएम के माध्यम से घर-घर बैंकिंग सेवाएं सुनिश्चित करना, प्राथमिक कृषि ऋण समितियों, डेयरी सहकारी समितियों और अन्य सहकारी संस्थाओं के सदस्यों को रुपये किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से शून्य-ब्याज ऋण का प्रावधान और ग्रामीण सहकारी बैंकिंग को मजबूत करना शामिल था।

बहुउद्देश्यीय कृषि सहकारी समितियों, डेयरी और मत्स्य सहकारी समितियों, अनाज भंडारण योजना, पीएसीएस और कृषि और ग्रामीण विकास बैंकों के डिजिटल परिवर्तन की समयबद्ध स्थापना का विस्तार, ताकि पारदर्शिता, परिचालन दक्षता और सेवा पहुंच में सुधार हो सके।

प्रदेश में निरंतर बढ़ रहा है सिंचाई का रकबा

मल्हारगढ़ दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को मंत्रि परिषद की स्वीकृति

भोपाल। जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने कहा है कि प्रदेश में बेहतर जल प्रबंधन, जल संरक्षण एवं विभिन्न सिंचाई योजनाओं के माध्यम से सिंचाई का रकबा निरंतर बढ़ रहा है। डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में संपन्न मंत्रि-परिषद की बैठक में पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना अंतर्गत मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ (शिवना) दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना लागत राशि 2932 करोड़ 30 लाख रुपये, सैच्य क्षेत्र 60 हजार हेक्टेयर की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वीकृत परियोजना से मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ तहसील के 32 ग्राम एवं मंदसौर तहसील के 115 ग्राम लाभान्वित होंगे।

जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने बताया कि इस परियोजना की कुल लागत 3104 करोड़ 60 लाख रुपये है तथा इससे मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ एवं मंदसौर तहसील के

60 हजार हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होगी एवं 147 ग्रामों के लगभग 35 हजार किसान परिवार लाभान्वित होंगे। परियोजना अंतर्गत शिवना नदी में बैराज का निर्माण कर वर्षा ऋतु में पम्पिंग के माध्यम से जल उद्दहन कर ग्राम पीथाखेड़ी जागीर में बैलेसिंग रिजर्वॉयर में जल का संग्रहण कर 44 हजार 500 हेक्टेयर क्षेत्र में और गांधी सागर बांध में जल उद्दहन कर काकासाहेब गाडगिल में जल प्रवाहित करते हुए 15 हजार 500 हेक्टेयर क्षेत्र में इस प्रकार कुल 60 हजार हेक्टेयर में सिंचाई की जाएगी। परियोजना में 133.22 हेक्टेयर निजी भूमि, 42.50 हेक्टेयर वन एवं 630.28 हेक्टेयर शासकीय भूमि प्रभावित होगी। श्री सिलावट ने बताया कि परियोजना के तहत बैराज, इंटेकवेल, पंप हाउस, राजिंग मैन, पाईप नेटवर्क, वितरण प्रणाली एवं स्काडा कार्य प्रस्तावित है।

किसानों पर परिवहन लागत का बोझ नहीं पड़ेगा : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय ग्रामीण विकास व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसान इसकी आत्मा है। किसान की खेती अगर अच्छी होगी तो यह भगवान की ही पूजा होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खेती कैसे आगे बढ़े, यही प्रयास रहता है।



गेहूं को भी एमएसपी पर खरीदा जायेगा। सोयाबीन के दाम कम हुए हैं। उन्होंने कहा कि मैं आने वाले दिनों में ब्राजील जा रहा हूँ वहां सोयाबीन की फसल बंपर होती है। मैंने वैज्ञानिकों को निर्देश दिये हैं कि हाईब्रिड सोयाबीन के बीज तैयार करें जिससे सोयाबीन का उत्पादन ज्यादा

हो। सोयाबीन के अलावा भी जो तेल आयात होता था उस पर कोई शुल्क नहीं लगता था जिससे सोयाबीन का दाम और कम हो जाता था। इस बार साढ़े 27 प्रतिशत आयात शुल्क लगाया है जिससे देश के किसानों की सोयाबीन सस्ते दामों पर नहीं बिके। श्री चौहान ने कहा कि यूपीआई की तरह अब एक यूनिक किसान आईडी बन रही है जिससे एक ही जगह किसान का पूरा रिकॉर्ड हो जायेगा। रिमोट सेन्सिंग के माध्यम से अब खराब फसल का सही आंकलन किया जाता है जिसमें कोई भी गड़बड़ नहीं कर सकेगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर बना रहे हैं। किसान की जिन्दगी कैसे बेहतर हो इसमें दिन और रात

लगे हुए हैं। श्री चौहान ने कहा कि पिछले दिनों केंद्र सरकार ने फैसला किया है कि तुअर, उड़द, मसूर को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदा जायेगा।

जल की बूंद-बूंद का संरक्षण करें : श्री सिलावट

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत केरवा डैम के समीप किया श्रमदान

भोपाल। जल संसाधन विभाग मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट ने जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत केरवा डैम के समीप श्रमदान किया। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित सभी नागरिकों से जल की एक-एक बूंद को संरक्षित करने का आह्वान किया। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के संकल्प को पूरा करने और नदियों एवं तालाबों के संवर्धन के लिए प्रदेश में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में जल स्रोतों के संरक्षण, जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य व्यापक पैमाने पर किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सभी अपनी सक्रिय भागीदारी से सफल बनाएं।

केरवा डैम, भोपाल के समीप जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आयोजित किए गए श्रमदान कार्यक्रम में विधायक श्री भगवानदास सबनानी, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री विष्णु खत्री, श्री तीरथ मीणा, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री प्रमोद राजपूत, सरपंच श्रीमती मीरा तोमर, पर्यावरण विद श्री अभिलाष खांडेकर, विभागीय अधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित थे। मंत्री श्री सिलावट ने अधिकारियों को जल स्रोतों के सौंदर्यीकरण और गहरीकरण करने के निर्देश

दिए। उन्होंने जल संसाधन विभाग के तालाबों पर हर प्रकार के अतिक्रमण को तत्काल हटाने के भी सख्त निर्देश दिए। श्री सिलावट ने कहा कि जल संकट का समाधान जल गंगा संवर्धन अभियान में निहित है। उन्होंने झाबुआ जिले की प्रसिद्ध हलमा प्रथा से प्रेरणा लेते हुए सभी से अपने जीवन में कम से कम 1 घंटा श्रमदान करने का आग्रह किया। मंत्री श्री सिलावट ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो अभियान के संकल्प को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध नदी जोड़ो परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किए जाने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बुंदेलखंड क्षेत्र में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। श्री सिलावट ने मध्य प्रदेश में अगले पांच वर्षों में सिंचाई रकबे को 65 हजार हेक्टेयर से बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाने के लक्ष्य की भी बात कही।

उम्मीद से
ज्यादा का वादा

60.5
HP DI 6565 AV

TREM-IV ENGINE

4
सिलिंडर का
4088 CC
दमदार इंजन

विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मेग गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28



दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm



हर कदम हर डगर

ACE TRACTORS

हर किसान का हमसफर

100%
Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - **संजय कुमार : 9540943883**

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com